एक्ज़िम बैंक
EXIM BANK
भारतीय निर्यात-आयात बैंक
EXPORT-IMPORT BANK OF INDIA

एक्ज़िमिअस :
निर्यात लाभ

जून 2016
खंड XXXI अंक II

इस अंक में

1-3 क्यों करें अफ्रीका के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में निवेश
4 ब्रिटेन का हालिया आर्थिक घटनाक्रम
5 बांग्लादेश का हालिया आर्थिक घटनाक्रम
6 हल्दी : भारत से निर्यात की संभावनाएं
7 एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं
8 तिमाही गतिविधियां
9 भारतीय टेक्सटाइल उद्योग : हालिया ट्रेंड और संभावनाएं
10 रत्न और आभूषण
11 एक्ज़िम बैंक की गतिविधियां और साहित्य समीक्षा
12 देशों का सूक्ष्मावलोकन
13 मुद्रा जगत
14 भारतीय एक्ज़िम बैंक का कार्य-निष्पादन
15 भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य
16 व्यापार एवं भागीदारी अवसर

भारतीय निर्यात-आयात बैंक का तिमाही प्रकाशन
www.eximbankindia.in

क्यों करें अफ्रीका के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में निवेश

अफ्रीका पर दुनिया की पैनी नजर है। क्योंकि यह दुनिया की चंद तेजी से बढ़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले क्षेत्रों में से एक है। बीते कुछ वर्षों से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती दस अर्थव्यवस्थाओं में से चार अफ्रीका महाद्वीप से ही रही हैं। महाद्वीप में लगभग एक अरब से ज्यादा तेजी से बढ़ती युवा आबादी है। इनमें से आधे से ज्यादा लोग 25 साल से कम उम्र के हैं और करीब एक तिहाई लोगों के पास मोबाइल फोन है। इसके साथ ही अफ्रीका तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है और इसकी आबादी का 2/5वां हिस्सा अब शहरों में रहता है।

अफ्रीका में बड़े अवसरों के साथ-साथ बहुत सी चुनौतियां भी हैं। आर्थिक और सामाजिक चुनौतियां। पहली आधारभूत चुनौती है स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अपर्याप्त इन्फ्रास्ट्रक्चर। इस महाद्वीप में सबसे बड़ी चिंता का विषय स्वास्थ्य क्षेत्र ही है। यहां हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है। वह भी ऐसी बीमारियों से जिनका इलाज संभव है या जिन बीमारियों को फैलने से रोका जा सकता है। स्वास्थ्य शिक्षा और आधारभूत स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच का अभाव, सरकारी बजट की कमी और स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनलों के अभाव के चलते लोगों के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं आ पा रहा है। ज्यादातर स्वास्थ्य सूचकांकों में अफ्रीका शेष विश्व से काफी पीछे रह जाता है। सिर्फ आंकड़ों में ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य मानकों पर प्रगति के मामले में भी यही स्थिति है। यह स्थिति तब और बिगड़ जाती है जब मौजूदा बीमारियां तेजी से फैलती हैं या कोई नई बीमारी महामारी का रूप ले लेती है।

इस पृष्ठभूमि में, यह कहना गलत नहीं होगा कि अफ्रीका का स्वास्थ्य क्षेत्र अभी नवोदित अवस्था में है और स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश करने वालों को महाद्वीप में अलग-अलग क्षेत्रों में कारोबार के नए और नवोन्मेषी मॉडल विकसित करने के बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराता है। अफ्रीका के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भूमिका आने वाले एक दशक में स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार में बेहद महत्वपूर्ण होगी।

भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र

भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जोरदार वृद्धि हो रही है और आज यह सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। एक अनुमान के मुताबिक यह क्षेत्र 2015-20 के दौरान 22.9 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ते हुए 280 बिलियन यूएस डॉलर का हो जाएगा। यद्यपि यहां सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का नेटवर्क भी अच्छा खासा है, लेकिन निजी क्षेत्र का हिस्सा इसमें ज्यादा बड़ा है, जो आज 60 से 70 प्रतिशत तक मरीजों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहा है।

अस्पताल सेग्मेंट काफी हद तक बंटा हुआ है। ज्यादातर अस्पताल डॉक्टरों और ट्रस्टों द्वारा तथा शेष कॉर्पोरेट हॉस्पिटल चेन द्वारा चलाए जा रहे हैं। 2014 में भारत में निजी अस्पतालों का बाजार करीब 54 बिलियन यूएस डॉलर का था। अस्पतालों और अस्पताल बेड में निजी क्षेत्र का अनुमानित हिस्सा क्रमशः 74% और 40% था। द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थ श्रेणी के स्वास्थ्य सेवा संस्थान निजी क्षेत्र से ही हैं, जो ज्यादातर मेट्रो शहरों, टियर I और टियर II शहरों में हैं। निजी क्षेत्र का बड़ा निवेश भारत के अस्पताल उद्योग के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला है।

इतना ही नहीं, भारत फार्मासूटिकल्स, विशेष रूप से जेनरिक दवाओं का प्रमुख उत्पादक और आपूर्तिकर्ता देश है। फार्मासूटिकल उत्पादों (एचएस 30) के निर्यात में 2011 से 2015 के दौरान 11% की सीएजीआर से वृद्धि दर्ज की गई। भारत के फार्मासूटिकल उत्पादों का प्रमुख आयातक देश अमेरिका रहा। कुल फार्मासूटिकल आयात का 37.6% हिस्सा अकेले अमेरिका ने ही आयात किया। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका (3.9%), यूके (3.6%), नाइजीरिया (3.1%) और रूस (2.8%) का स्थान रहा।

देश में विश्वस्तरीय अस्पतालों और कुशल मेडिकल प्रोफेशनलों की मौजूदगी से मेडिकल टूरिज्म के लिए पसंदीदा जगह के रूप में भारत

की स्थिति और मजबूत हुई है। वैश्विक मंदी के बावजूद भारत का मेडिकल ट्रैवल उद्योग तेजी से बढ़ते क्षेत्र के रूप में उभरा है। भारत की ओर विदेशों का ध्यान खींचने वाली प्रमुख स्वास्थ्य सेवाओं में दांतों, आंखों के साथ-साथ ऑर्थपैडिक, ट्रॉमा, कार्डियाक केयर (सर्जरी सहित), यूरोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, प्लास्टिक और कॉस्मेटिक सर्जरी, लैप्रोस्कोपिक सर्जरी, गेस्ट्रोएंटरोलॉजी, किडनी ट्रांसप्लांट और घुटना / हिप सर्जरी प्रमुख हैं।

सस्ती मेडिकल सेवाएं दुनियाभर से मरीजों को आकर्षित करती हैं और इनके चलते देश का मेडिकल टूरिज्म बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, सुशिक्षित, अंग्रेजी बोलने वाला मेडिकल स्टाफ, अत्याधुनिक अस्पतालों और जांच केंद्रों की मौजूदगी से भी मेडिकल टूरिज्म के लिए भारत की स्थिति को मजबूती मिली है। इसके साथ ही भारत में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपैथी और योग जैसी परंपरागत स्वास्थ्य सेवाएं भी सुलभ हैं।

भारतीय पर्यटन मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी पर्यटकों के भारत आने की संख्या बढ़ रही है और 2014 में यह 7.7 मिलियन के आसपास रही। 2014 में भारत आने वाले कुल विदेशी पर्यटकों में से मेडिकल वीजा पर आने वालों की संख्या करीब 2.4% या लगभग 1,85,000 थी।

अफ्रीकी देशों में नाइजीरिया से सबसे ज्यादा 34.1% पर्यटक मेडिकल वीजा पर भारत आए। 2014 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या 56,246 रही, जिनमें से 19.2% मेडिकल वीजा पर आए थे। इस तरह दक्षिण अफ्रीका से कुल पर्यटकों का 26.2% हिस्सा मोडिकल वीजा पर भारत आया था। केन्या से मेडिकल वीजा पर भारत आने वालों की संख्या 6000 से ज्यादा रही, जो कुल पर्यटकों का 14.8% है।

अफ्रीका के फार्मा उद्योग में भारत की उपस्थिति

अफ्रीका ने 2015 में भारत से 15.1 बिलियन यूएस डॉलर के फार्मासूटिकल उत्पाद आयात किए। अफ्रीकी देशों की बात करें तो दक्षिण अफ्रीका 14.3% हिस्से के साथ सबसे बड़ा आयातक देश रहा। इसके बाद मिस्र (13.5%), अल्जीरिया (11.5%), नाइजीरिया (7.8%) और इथियोपिया (4.6%) का स्थान रहा।

अफ्रीका के लिए भारत 20% हिस्से के साथ फार्मासूटिकल उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा आयात स्रोत रहा। अफ्रीका के लिए अन्य प्रमुख आयात स्रोत देशों में फ्रांस (18.0% हिस्सा), स्विट्जरलैंड (6.4%) और अमेरिका (5.5%) शामिल रहे। इसके अतिरिक्त, अफ्रीका द्वारा एचआईवी के इलाज के लिए एंटी-रेट्रोवायरल दवाओं का लगभग 85% हिस्सा भारत से ही आयात किया जाता है।

अफ्रीका द्वारा फार्मासूटिकल उत्पादों का कुल आयात 2010 के 11.9 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2015 में 15.1 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया, जिसमें 6.2% की सीएजीआर दर्ज की गई। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान भारत द्वारा अफ्रीका को किए गए फार्मासूटिकल निर्यात में 10.9% की सीएजीआर से तीव्र वृद्धि दर्ज की गई, जो 2.01 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 3.04 बिलियन यूएस डॉलर का हो रहा। 2015 में भारत के कुल फार्मासूटिकल निर्यात का 68.7% हिस्सा अफ्रीका के शीर्ष 10 निर्यात बाजारों में ही निर्यात किया गया। इसमें से 30% हिस्सा दक्षिण अफ्रीका और नाइजीरिया का रहा।

2015 में 250 मिलियन यूएस डॉलर से ज्यादा के फार्मासूटिकल उत्पाद आयात करने वाले देशों का प्रतिस्पर्द्धी बाजार विश्लेषण बताता है कि भारत कांगो, मोजाम्बिक, मिस्र, तंजानिया, सूडान, इथियोपिया और नाइजीरिया जैसे देशों में ज्यादा सफल रहा है। इन देशों में 2011 और 2015 के दौरान भारत से फार्मासूटिकल उत्पादों के निर्यात की सीएजीआर संपूर्ण अफ्रीका से ज्यादा रही। ध्यान देने वाली बात यह भी है कि ये देश अफ्रीका में तेजी से बढ़ते फार्मासूटिकल बाजार हैं, क्योंकि इन देशों में इसी अवधि के दौरान फार्मासूटिकल उत्पादों के आयात की सीएजीआर, संपूर्ण अफ्रीका से ज्यादा रही है।

वहीं दूसरी ओर, यूगांडा, केन्या, कैमरून और घाना जैसे बाजारों में भारत पीछे छूट रहा है। इन देशों को भारत से फार्मासूटिकल निर्यात का सीएजीआर, संपूर्ण अफ्रीका को निर्यात के सीएजीआर से कम रहा। इन देशों द्वारा फार्मासूटिकल उत्पादों के आयात का सीएजीआर भी संपूर्ण अफ्रीका द्वारा आयात के सीएजीआर से ज्यादा रहा।

भारत सरकार भी विभिन्न पहलों के जरिए अफ्रीकी देशों के साथ व्यवसाय बढ़ा रही है। जैसे - बोत्सवाना में मलेरिया रोकथाम कार्यक्रम और अल्जीरिया में एफएमडी (फुट एंड माउथ डिजीज) रोकने वाली दवाओं की आपूर्ति। इसके अलावा कोमोर्स, रवांडा, मेडागास्कर, सेनेगल और साओ टोम एंड प्रिंसिप में पैन अफ्रीका ई-नेटवर्क परियोजना भी सफलतापूर्वक कार्य कर रही है, विशेष रूप से टेलीमेडिसिन क्षेत्र में।

विदेशों में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में प्रमुख भारतीय सफलताएं

इसमें कोई दो राय नहीं कि अफ्रीकी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सुधार की अपार गुंजाइश है। इन सुधारों के लिए सरकारी भागीदारी, सार्वजनिक-निजी भागीदारी, संयुक्त उपक्रमों और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) जैसे उपाय से किए जाने की जरूरत है। अफ्रीका के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी को पूरा करने में एफडीआई की अहम भूमिका हो सकती है। यहां स्वास्थ्य क्षेत्र की बड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए अफ्रीका को भारत का साथ मिल सकता है। यह भागीदारी इस क्षेत्र के लिए न सिर्फ हर तरह से फायदेमंद होगी, बल्कि अस्पताल इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ी करने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी भूमिका होगी।

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अफ्रीका की फंडिंग और पहुंच बढ़ाने का एक तरीका नवोन्मेषी सार्वजनिक-निजी भागादारी (पीपीपी) है। एक ओर जहां प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तर पर भागीदारी का मॉडल विकसित करना अब भी दुःस्वप्न है, वहीं दूसरी ओर भारतीय कैंपनियों के सहयोग से सरकारों और निजी क्षेत्र द्वारा भागीदारी के जरिए अफ्रीका में आने वाले समय में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के सफल निष्पादन का ब्लूप्रिंट बनाने में मदद मिल सकती है।

ऐसी बहुत सी भारतीय स्वास्थ्य सेवा कैंपनियां हैं जो विश्व के कई हिस्सों में पहले ही उपक्रम लगा चुकी हैं। जैसे - अपोलो हॉस्पिटल्स, डॉ. अग्रवाल्ज़ आय हॉस्पिटल, फोर्टिस हेल्थकेयर, इंडस हेल्थकेयर, मणिपाल हेल्थ एंटरप्राइजेज, नारायणा हेल्थ और शैल्बी हॉस्पिटल्स। इनमें से कुछ ने तो बिजनेस और कॉमर्शियल पार्टनरशिप के अलग-अलग मॉडल क्रियान्वित करते हुए अफ्रीका में भी परियोजनाएं लगाई हैं। आने वाले वर्षों में इनमें से कुछ मॉडलों पर अफ्रीका के विभिन्न देशों में काम किया जा सकता है।

भारत-अफ्रीका स्वास्थ्य सेवा सहयोग: आगे की राह

अफ्रीका के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए सबसे जरूरी और महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक है मानव संसाधन। अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में योग्य स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनलों की कमी चिंता का विषय बनी हुई है। इस मामले में भारत उत्कृष्ट स्रोत हो सकता है, जो अफ्रीकी देशों को मेडिसिन के क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में मदद कर सकता है। भारतीय संस्थाओं द्वारा डॉक्टरों को प्रशिक्षण के अलावा अफ्रीका में बड़ी आबादी को नर्सिंग और अन्य पैरामेडिकल सेवाओं के लिए प्रशिक्षण दिए जाने की खूब संभावनाएं हैं।

इसके साथ ही परंपरागत मेडिसिन के ज्ञान को संरक्षित रखना जरूरी है, ताकि वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी उनका लाभ मिल सके। कई अफ्रीकी देशों में परंपरागत स्वास्थ्य सेवाएं उबंटू या उन्हू जैसे विशेष दर्शन के जरिए प्रदान की जाती हैं। भारत ने ट्रैडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) पहल के अंतर्गत हाल ही में पांच अंतरराष्ट्रीय भाषाओं अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश और जापानी में 2,92,662 परंपरागत औषधियों का संकलन किया है। टीकेडीएल में भारत के अनुभव को उबंटू अथवा उन्हू जैसी परंपराओं को सहेजने के लिए अफ्रीका में दोहराया जा सकता है।

अफ्रीकी महाद्वीप में प्रौद्योगिकीय प्रभाव की बात करें तो छोटी-छोटी पहलों से बड़े मोर्चे पर सुधार किए जा सकते हैं। खास तौर पर तब जब यह महाद्वीप स्वास्थ्य सुविधाओं और कुशल श्रमशक्ति के अभाव में खुद को कमतर पाता है। भारत ने बीते कुछ वर्षों में अफ्रीका को टेलीमेडिसिन कार्यक्रम से जोड़ने में पहले ही महत्वपूर्ण पड़ाव पार कर लिया है। तथापि, भारत आईसीटी फ्रेमवर्क का इस्तेमाल करते हुए अफ्रीकी महाद्वीप में स्वास्थ्य सेवा संबंधी समस्याओं के समाधान की दिशा में बहुत कुछ कर सकता है।

भारत में 1991 में उदारवाद के बाद के दौर में स्वास्थ्य सेवा संबंधी नीतियों में हुए सुधार के चलते स्वास्थ्य क्षेत्र लगातार विकसित होता गया है। इनमें से बहुत-सी नीतियां भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार में महत्त्वपूर्ण रही हैं। समुचित नीति निर्माण और संस्थागत फ्रेमवर्क की स्थापना में भारत के अनुभव अफ्रीकी देशों के लिए भी फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

हालांकि आज भारत में ज्यादातर नई स्वास्थ्य सेवा सुविधाएं निजी क्षेत्र में हैं। तथापि, सरकारी दखल वाले स्वास्थ्य क्षेत्रों में भी ये सुविधाएं कम नहीं हैं। सरकार और निजी क्षेत्र की भागीदारी वाली स्वास्थ्य बीमा जैसी सेवाओं में भारत के अनुभव विभिन्न अफ्रीकी देशों के साथ साझा किए जा सकते हैं और उसी फ्रेमवर्क पर अफ्रीका में काम किया जा सकता है।

अफ्रीका में स्वास्थ्य सेवा इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की फंडिंग के मामले में भी भारत के लिए अवसर हो सकते हैं, जिन्हें भुनाया जा सकता है। इससे अफ्रीकी देशों में प्राथमिक और तृतीयक दोनों तरह की स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा सकेंगी। यह काम पीपीपी मॉडल के जरिए हो सकता है, जिसमें भारत से निजी क्षेत्र (व्यक्तिगत रूप से या स्थानीय भागीदारों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से) और अफ्रीका से किसी संप्रभु संस्था को शामिल किया जा सकता है। रियायत, आवश्यक नीतिगत फ्रेमवर्क और संसाधन जुटाने आदि जैसे कार्यों के लिए मेजबान सरकार के सहयोग की जरूरत होगी। इसके अतिरिक्त अफ्रीकी देश इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना के लिए ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत निधि जुटाने के लिए भारत सरकार से भी निवेदन कर सकते हैं। इस तरह विदेशी पीपीपी मॉडल के निष्पादन में स्वास्थ्य सेवा इंफ्रास्ट्रक्चर के वित्तपोषण की चुनौती से भी निपटा जा सकता है। फिर अस्पताल चलाने वाली संस्था को मेडिकल उपकरणों के आयात के लिए भी फंड की जरूरत होगी। यह जरूरत संस्थागत फंडिंग व्यवस्था के जरिए पूरी की जा सकती है, क्योंकि ऐसी आवश्यकताएं वाणिज्यिक होती हैं। कुछ मामलों में, मेजबान देश में जहां भी स्थानीय भागीदार शामिल है, चाहे वह सार्वजनिक अस्पताल हो या निजी स्वामित्व वाला अस्पताल, मौजूदा स्वास्थ्य सेवा इंफ्रास्ट्रक्चर को ऋण-व्यवस्था के लिए अपग्रेड किया जा सकता है।

लब्बोलुआब

अफ्रीका में स्वास्थ्य सेवाओं के वित्तपोषण की बदलती रूपरेखा को देखते हुए स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में निजी क्षेत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अफ्रीकी सरकारें और स्वास्थ्य सेवा विशेषज्ञ इस महाद्वीप में उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए पीपीपी मॉडल को सबसे ज्यादा प्राथमिकता देंगे। कुछ भारतीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाता संस्थाओं ने विदेशों में अस्पताल और क्लीनिक बनाने और उनका संचालन करने में दक्षता प्राप्त कर ली है।इनके कौशल का इस्तेमाल अफ्रीका में भी किया जा सकता है। इस तरह महाद्वीप की बड़ी आबादी को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए भारतीय अस्पताल समूह अफ्रीकी सरकारों के साथ मिलकर काम करते हुए नई भूमिका अदा कर सकते हैं।

4 ब्रिटेन का हालिया आर्थिक घटनाक्रम

घरेलू अर्थव्यवस्था

ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को हाल ही में खपत में गिरावट के साथ-साथ विनिर्माण तथा निर्माण क्षेत्रों में मंदी का सामना करना पड़ा। इससे 2015 में जीडीपी वृद्धि दर पिछले साल के 2.9% से गिरकर 2.3% ही रह गई। समग्र रूप में देखें तो 2015 में ब्रिटेन की जीडीपी 44,239 यूएस डॉलर प्रति व्यक्ति जीडीपी के साथ 2.8 ट्रिलियन डॉलर की रही।

ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र सबसे मजबूत है। 2014 में ब्रिटेन की कुल जीडीपी में 78.5% हिस्सा सेवा क्षेत्र का ही रहा (उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार)। इसके बाद उद्योग (जीडीपी का 20.8%) और कृषि (0.7%) का स्थान रहा।

व्यापार और बाहरी क्षेत्र

ब्रिटेन का निर्यात 2015 में 9.8% गिरकर 436 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो पिछले वर्ष 483.4 बिलियन यूएस डॉलर का रहा था। ब्रिटेन के आयात में भी 8.6% की गिरावट दर्ज की गई और यह 2014 के 685.8 बिलियन यूएस डॉलर से गिरकर 2015 में 627.1 बिलियन यूएस डॉलर का ही रह गया। वहीं, 2015 में ब्रिटेन का व्यापार घाटा घटकर 191.2 बिलियन यूएस डॉलर रह गया, जो 2014 में 202.5 बिलियन यूएस डॉलर दर्ज किया गया था।

मशीनरी और उपकरण (ब्रिटेन के कुल निर्यात का 14%) 2015 में ब्रिटेन से निर्यात होने वाली प्रमुख मदों में शामिल रहे। इनके बाद खनिज ईंधन (10.8%), रेलवे, ट्रामवे के अलावा वाहन (10.6%) मोती और कीमती रत्न (10.5%)और फार्मासूटिकल (6%) का स्थान रहा।

मशीनरी और उपकरण 2015 में ब्रिटेन द्वारा आयात की गई प्रमुख मदों में भी शामिल रहे, जिनका कुल आयात में 13.4% हिस्सा रहा। ब्रिटेन द्वारा आयात की गई अन्य प्रमुख मदों में खनिज ईंधन (12%), रेलवे के अलावा वाहन (10.1%), इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (8.9%), कीमती रत्न और धातुएं (5.6%), फार्मासूटिकल उत्पाद (4.2%) और प्लास्टिक तथा प्लास्टिक का सामान (2.9%) शामिल रहे।

ब्रिटेन के लिए सबसे बड़ा आयातक अमेरिका रहा, जिसने 2015 में ब्रिटेन के कुल निर्यात का 12.6% हिस्सा अकेले ही आयात किया। इसी वर्ष ब्रिटेन से आयात करने वाले अन्य प्रमुख देशों में जर्मनी (कुल निर्यात का 10.2%), नीदरलैंड (7.2%), स्विट्जरलैंड (6.9%) और फ्रांस (6.4%) शामिल रहे।

वहीं, यदि ब्रिटेन द्वारा किए गए आयात की बात करें तो 2015 में इसने जर्मनी से सबसे ज्यादा आयात किया। इस वर्ष ब्रिटेन के कुल आयात में जर्मनी की 14.4% हिस्सा रहा। इसी वर्ष ब्रिटेन को निर्यात करने वाले अन्य प्रमुख देशों में चीन (9.2%), अमेरिका (8.4%), नीदरलैंड (7.7%) और फ्रांस (6.3%) शामिल रहे।

वहीं, 2015 में ब्रिटेन का चालू खाता घाटा घटकर 146.7 बिलियन यूएस डॉलर रह गया, जो 2014 में 151.9 बिलियन यूएस डॉलर दर्ज किया गया था। व्यापार घाटा काबू में रहने से सेवा खातों में आधिक्य दर्ज किया गया।

एफडीआई, व्यापार की सुगमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

अंकटाड की विश्व निवेश रिपोर्ट 2015 के अनुसार, ब्रिटेन में 2014 में एफडीआई प्रवाह 72.2 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो 2013 में 47.7 बिलियन यूएस डॉलर दर्ज किया गया था।

विश्व बैंक और इंटरनेशनल फायनेंस कॉपरेशन द्वारा कराए गए डूइंग बिजनेस 2016 सर्वेमें दुनिया के 189 देशों को 1 से 189 तक की रैंकिंग दी गई है। कारोबार करने की सुगमता (ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस) में ऊंची रैंकिंग का मतलब है- किसी स्थानीय फर्म के लिए कोई कारोबार शुरू करने और उसे चलाने के लिए विनियामक परिवेश का ज्यादा बेहतर होना। इस सर्वे में किसी देश की रैंकिंग 10 विषयों के आधार पर तय की जाती है, जिनमें विभिन्न संकेतक होते हैं और हर एक को बराबर अंक दिए जाते हैं। इस सूची में ब्रिटेन छठे स्थान पर रहा।

विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक इंडेक्स रैंकिंग 2015-16 में 140 देशों में से ब्रिटेन पिछले वर्ष की भांति 2015-16 में भी 10वें स्थान पर रहा। यह इंडेक्स इस बात का सूचक है कि कोई देश अपने नागरिकों को कितनी समृद्धि प्रदान कर सकता है। यह इंडेक्स उस देश के संस्थानों, नीतियों और वर्तमान तथा मध्यम अवधि की आर्थिक समृद्धि प्रदान करने वाले फैक्टरों पर आधारित होता है।

ब्रेक्ज़िट और इसका प्रभाव [1,2]

ब्रेक्ज़िट की अप्रत्याशित जीत (48.1% पर 51.9%)से अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार तक प्रभावित हुए। ब्रिटिश पाउंड में अप्रत्याशित गिरावट दर्ज की गई और यह डॉलर के मुकाबले गिरते हुए मध्य 1980 के स्तर पर पहुंच गया। यूरो, उभरते बाजारों की मुद्राओं, वैश्विक इक्विटी (हालांकि अमेरिका के लिए कम) अन्य जोखिम आस्तियां और ज्यादातर कमोडिटी (सोने को छोड़कर) में भी तेजी से गिरावट दर्ज की गई।

बाजार पर कुछ हद तक दबाव यह भरोसा मिलने के बाद कम हुआ कि बड़े केंद्रीय बैंक बाजार से तरलता की मांग को पूरा करने के लिए हर संभव सहयोग करेंगे। छह प्रमुख केंद्रीय बैंकों ने मुद्रा स्वैप व्यवस्था के जरिए तरलता की मांग पूरा करने का भरोसा दिया। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने संकेत दिए कि वह बाजार में अतिरिक्त 250 बिलियन ब्रिटिश पाउंड जारी करने को तैयार है। केंद्रीय बैंक के आपात सहयोग से फंडिंग के संकट से निपटने में मदद मिलनी चाहिए, लेकिन आने वाले कुछ महीनों तक बाजारों में अस्थिरता बनी रहने की आशंका है।

ब्रेक्ज़िट का कारोबारी निवेश विशेष रूप से ब्रिटेन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के प्रवाह पर विपरीत असर पड़ेगा।

हालांकि छोटी अवधि के प्रभावों को छोड़ दें तो भी अस्थिर वैश्विक अर्थव्यवस्था और वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता और अधिक बढ़ गई है। सबसे बड़ा सवाल यह उभरकर आ रहा है कि वित्तीय केंद्र [3] के रूप में लंदन शहर पर इसका क्या असर पड़ने वाला हैऔर यूरोपीय बैंकिंग सेक्टर को कितनी क्षति पहुंचने वाली है। अनिश्चितता के बादल ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के भविष्य के संबंधों पर भी मंडरा रहे हैं। मोटे तौर पर देखा जाए तो यूरोपीय संघ विरोधी भावनाओं के बढ़ने और यूरोप के अन्य देशों में भी जनमत संग्रह की मांग बढ़ने का खतरा है, (विशेष रूप से उत्तरी यूरोप में)। वैश्विक रूप से देखा जाए तो अमेरिका सहित दूसरे देशों में इमिग्रेशन और मुक्त व्यापार विरोधी भावनाओं के भड़कने का भी बड़ा खतरा है, जिससे सत्ता विरोधी आंदोलन हो सकते हैं। इससे युद्धो की स्थिति बनती है तो युद्धोपरांत वैश्विक व्यापार, निवेश और वित्तीय व्यवस्था को खतरा हो सकता है।

---

[1] ब्रिटेन के यूरोपीय संघ में रहने या बाहर जाने पर 23 जून, 2016 को जनमत संग्रह किया गया। इसके लिए यूरोपीय संघ जनमत संग्रह अधिनियम 2015 पारित किया गया था। ब्रेक्ज़िट से ब्रिटेन यूरोपीय संघ की कस्टम्स यूनियन से बाहर हो जाएगा।

[2] स्रोतः आईआईएफ डिस्पैचः ब्रेक्ज़िट फ्रायडे काउंटिंग द कोस्ट्स (24 जून, 2016)

[3] एचएसबीसी, जेपी मॉर्गन चेज़ और गोल्डमैन साक्स जैसे कई बड़े बैंकों ने अपने कुछ परिचालन डबलिन, पेरिस और फ्रैंकफर्ट से करने की तैयारी शुरू कर दी है (वैश्विक मंच पर घटता ब्रिटेन का प्रभाव, द फायनेंशियल टाइम्स, 27 जून, 2016)

बांग्लादेश का हालिया आर्थिक घटनाक्रम

घरेलू अर्थव्यवस्था

निजी खपत में तेजी से हुई वृद्धि के चलते बांग्लादेश की वास्तविक जीडीपी 2014 के 6.1% के मुकाबले 2015 में 6.6% की रफ्तार से बढ़ी। समग्र रूप में देखें तो 2015 में बांग्लादेश की जीडीपी 1,089 यूएस डॉलर प्रति व्यक्ति जीडीपी के साथ 195.1 बिलियन यूएस डॉलर की रही।

मूलभूत तथ्य
भौगोलिक क्षेत्र : 1,47,570 वर्ग किमी
जनसंख्या : 161.0 मिलियन (2015)
भाषा : बांग्ला; उर्दू और हिन्दी अल्पसंख्यक भाषाएं हैं
मुद्रा : टका (टीके)
जीडीपी : 195.1 बिलियन यूएस डॉलर (2015)
निर्यात : 31.7 बिलियन यूएस डॉलर (2015)
आयात : 37.6 बिलियन यूएस डॉलर (2015)

औसत उपभोक्ता मूल्य महंगाई दर 2014 की 7% के मुकाबले कुछ कम 6.2% रही। इसकी एक मुख्य वजह वैश्विक ऊर्जा कीमतों का कम रहना भी रहा।

बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था में मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र सबसे मजबूत है। 2015 में बांग्लादेश की कुल जीडीपी में 53.6% हिस्सा (अनुमानित) सेवा क्षेत्र का ही रहा। इसके बाद उद्योग (30.4%) और कृषि (16%) का स्थान रहा। बांग्लादेश के कुछ प्रमुख उद्योगों में जूट, कॉटन, गारमेंट, कागज, चमड़ा, उर्वरक, लौह और स्टील, सीमेंट, पेट्रोलियम उत्पाद, तंबाकू, फार्मासूटिकल, मिट्टी के बर्तन, चाय, नमक, चीनी, खाद्य तेल, साबुन और डिटर्जेंट, फैब्रिकेटेड मेटल उत्पाद, बिजली और प्राकृतिक गैस शामिल हैं।

बांग्लादेश में कोयले, चूना पत्थर, शीशे, बालू और यूरेनियम और थोरियम जैसे भारी खनिजों का सीमित भंडार है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार 2012 में बांग्लादेश की कुल भूमि में से कृषि योग्य भूमि 59% थी (उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार)।

व्यापार और बाहरी क्षेत्र

बांग्लादेश का निर्यात 2015 में 6.1% बढ़कर 31.7 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो 2014 में 29.9 बिलियन यूएस डॉलर का रहा था। बांग्लादेश के आयात में भी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई और यह 2014 के 37.4 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2015 में 37.6 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। परिणामतः 2015 में बांग्लादेश का व्यापार घाटा घटकर 5.9 बिलियन यूएस डॉलर रह गया, जो 2014 में 7.5 बिलियन यूएस डॉलर दर्ज किया गया था।

परिधान, एक्सेसरीज (एचएस 61, 62 और 63) 2015 में बांग्लादेश से निर्यात होने वाली प्रमुख मदों में शामिल रहे, जिनका हिस्सा देश के कुल निर्यात में 88% रहा। 2015 में बांग्लादेश द्वारा निर्यात की गई अन्य प्रमुख मदों में फुटवेयर, गेटर और ऐसी ही अन्य वस्तुएं (2.3%) और वेजीटेबल टेक्सटाइल फाइबर (1.8%) शामिल रहे।

बांग्लादेश से सबसे बड़ा आयातक अमेरिका रहा, जिसने 2015 में बांग्लादेश के कुल निर्यात का 17.5% हिस्सा अकेले ही आयात किया। इसी वर्ष बांग्लादेश से आयात करने वाले अन्य प्रमुख देशों में जर्मनी (बांग्लादेश से कुल निर्यात का 14.6%), ब्रिटेन (10%), फ्रांस (6.7%) और स्पेन (6.5%) शामिल रहे।

2015 में कॉटन बांग्लादेश द्वारा आयात की गई प्रमुख मद रही, जिसका कुल आयात में 13% हिस्सा रहा। बांग्लादेश द्वारा आयात की गई अन्य प्रमुख मदों में मशीनरी और उपकरण (कुल आयात का 11.7%), इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (7.4%), लौह और स्टील (4.9%) और मानव निर्मित स्टेपल फाइबर (4%) शामिल रहे।

वहीं, यदि आयात की बात करें तो 2015 में बांग्लादेश ने चीन से सबसे ज्यादा आयात किया, जिसका बांग्लादेश के कुल आयात में 35.4% हिस्सा रहा। इसी वर्ष बांग्लादेश को निर्यात करने वाले अन्य प्रमुख देशों में भारत (कुल आयात का 14.1%), सिंगापुर (5.8%), हांगकांग (3.7%) और जापान (3.5%) शामिल रहे।

वहीं, 2015 में बंग्लादेश का चालू खाता सरप्लस 2014 में 0.8 बिलियन यूएस डॉलर (जीडीपी के 0.4%) से बढ़कर 2015 में 2.7 बिलियन यूएस डॉलर (जीडीपी का 1.4%) हो गया।

एफडीआई, व्यापार की सुगमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

अंकटाड की विश्व निवेश रिपोर्ट 2015 के अनुसार, बांग्लादेश में 2014 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह 1.5 बिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो 2013 में 1.6 बिलियन यूएस डॉलर दर्ज किया गया था। इसी रिपोर्ट के अनुसार 2014 में बांग्लादेश से एफडीआई निर्वाह 48 मिलियन यूएस डॉलर का रहा, जो 2013 में 34 मिलियन यूएस डॉलर रहा था।

विश्व बैंक और इंटरनेशनल फायनेंस कॉपरेशन द्वारा कराए गए डूइंग बिजनेस 2016 सर्वे में दुनिया के 189 देशों को 1 से 189 तक की रैंकिंग दी गई है। कारोबार करने की सुगमता (ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस) में ऊंची रैंकिंग का मतलब है- किसी स्थानीय फर्म के लिए कोई कारोबार शुरू करने और उसे चलाने के लिए विनियामक परिवेश का ज्यादा बेहतर होना। इस सूची में बांग्लादेश 174 वें स्थान पर रहा।

विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक इंडेक्स रैंकिंग 2015-16 में 140 देशों में से बांग्लादेश 107 वें स्थान पर रहा। यह इंडेक्स इस बात का सूचक है कि कोई देश अपने नागरिकों को कितनी समृद्धि प्रदान कर सकता है। यह इंडेक्स उस देश के संस्थानों, नीतियों और वर्तमान तथा मध्यम अवधि की आर्थिक समृद्धि प्रदान करने वाले फैक्टरों पर आधारित होता है।

वृहत् आर्थिक परिदृश्य

2016 में निजी खपत में तेजी से होती वृद्धि और निवेश के चलते बांग्लादेश की वास्तविक जीडीपी के 6.5% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। खपत बढ़ती है तो इसका एक प्रमुख कारण कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि के चलते घरेलू आय में बढ़ोत्तरी होना रहेगा। खपत बढ़ने के अन्य कारणों में उपभोक्ता आधारित मध्यम महंगाई दर भी है, जिससे घरेलू खर्च बढ़ेगा। इसके साथ ही फसल में लंबे समय तक कोई दिक्कत न होने का फैक्टर भी काम करेगा।

इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं पर बढ़ते खर्च और टैक्स में धीमी बढ़ोत्तरी के कारण बजट घाटा बढ़कर वित्तीय वर्ष 2016/17 से 2019/20 तक जीडीपी का औसत 5.1% रहने के आसार हैं।

हल्दी : भारत से निर्यात की संभावनाएं

हल्दी में बहुत से गुण छिपे हैं। इसका वैज्ञानिक नाम कुरकुमा लोंगा है। इसे सब्जी में रंग लाने और एक मसाले के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। भारत दुनिया में हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। दुनिया की 80 प्रतिशत हल्दी भारत में ही होती है। भारत के अलावा चीन, म्यांमार, नाइजीरिया और बांग्लादेश में भी हल्दी का उत्पादन होता है।

देश के कृषि मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि एक आकलन के अनुसार 2014-15 में 189 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में हल्दी की खेती हुई और उत्पादन 852 हजार मीट्रिक टन रहा। हल्दी उत्पादन में आंध्र प्रदेश शीर्ष पर रहा और 2014-15 में कुल उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत वहीं हुआ। तमिलनाडु दूसरे स्थान पर रहा। अन्य प्रमुख हल्दी उत्पादक राज्य कर्नाटक, गुजरात और पश्चिम बंगाल रहे।

निर्यात

भारत से हल्दी (एचएस कोड 091030) का निर्यात 2011-12 से 2015-16 के दौरान 5.9 प्रतिशत की सीएजीआर से गिरा है। वर्ष 2012-13 के दौरान हल्दी के निर्यात में आश्चर्यजनक रूप से गिरावट दर्ज की गई थी और निर्यात मूल्य बीते वर्ष की तुलना में 43 प्रतिशत तक गिर गया था। हालांकि वर्ष 2014-15 में हल्दी के निर्यात ने लगभग 17 प्रतिशत और 2015-16 में 14 प्रतिशत की दर से रफ्तार पकड़ी है।

भारत से हल्दी के निर्यात की अच्छी संभावनाएं हैं, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में हल्दी की मांग में उछाल देखा गया है। यह देखा गया है कि वैश्विक व्यापार में दूसरे मसालों की तुलना में हल्दी का बाजार स्थिर और मजबूत है।

हल्दी की खेती के लिए केरल के कोझिकोड स्थित भारतीय मसाला शोध संस्थान और राज्य कृषि विश्वविद्यालय सहयोग प्रदान करते हैं। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने ओडिशा में कृषि निर्यात जोन को मंजूरी दी है, ताकि राज्य से हल्दी का निर्यात बढ़ाया जा सके।

टेबल 1 : भारत से हल्दी के निर्यात के लिए शीर्ष 10 देश

देश	2014-15	2015-16
	मिलियन यूएस डॉलर	
ईरान	12.0	18.3
अमेरिका	9.9	15.9
मलेशिया	9.5	10.1
यूएई	8.4	8.1
यूके	5.5	6.7
श्रीलंका	5.7	6.6
सऊदी अरब	5.4	6.4
जापान	5.6	5.3
नीदरलैंड	3.1	4.9
जर्मनी	3.5	4.8
विश्व	**124.5**	**141.6**

स्रोत : डीजीसीआईएस

टेबल 2 : हल्दी के प्रमुख आयात बाजार में भारत का हिस्सा 2015

आयातक देश	आयात मूल्य (यूएस मिलियन डॉलर में)	शीर्ष निर्यातक देश और उनका हिस्सा (%)
अमेरिका	23.7	भारत (75.6), चीन (9.5), फिजी (6.8), जमैका (1.6), इंडोनेशिया (1.3)
भारत	20.4	इंडोनेशिया(42.3), म्यांमार(34.3), वियतनाम(10), इथियोपिया(9), नाइजीरिया(3.8)
ईरान	15.8	भारत (88.1), यूएई (9.5), चीन (2.5)
जापान	10.2	भारत(71.3), चीन(25.2), वितयनाम(2.2), म्यामांर(0.8)
मलेशिया	10.0	भारत (90.8), म्यामांर (4.3), चीन (2.0), इंडोनेशिया (1.4), वितयनाम (0.5)
संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	5.9	भारत (92.8), इथियोपिया (3.7), म्यामांर (1.9), बहरीन (0.5)

स्रोत : ट्रेडैप, आईटीसी, जिनेवा (डेटा 15 जून 2016 को एक्सेस किया गया)

मध्य पूर्व क्षेत्र में भारतीय हल्दी की भारी मांग है, विशेष रूप से ईरान, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और सऊदी अरब में। दुनिया में ईरान तीसरा सबसे बड़ा हल्दी आयातक देश है और वह अधिकांश हल्दी भारत, यूएई तथा चीन से आयात करता है। ईरान द्वारा हल्दी का आयात बीते कुछ वर्षों से जहां लगातार बढ़ रहा है, वहीं भारत से ईरान को हल्दी का निर्यात भी 2011 के 7.28 मिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2015 में 18.3 मिलियन यूएस डॉलर का हो गया है।

अमेरिका भी विश्व में हल्दी के अग्रणी आयातकों में शामिल रहा है और इसकी मांग के ज्यादातर हिस्सा की आपूर्ति भारत द्वारा की जाती है। अमेरिका को हल्दी की आपूर्ति करने वाले अन्य प्रमुख देश चीन, फिजी और जमैका हैं। अमेरिका में हल्दी की मांग बढ़ने की वजह इसके पौष्टिक और चिकित्सकीय गुण तो हैं ही, इनके अलावा वहां के प्रस्संकृत खाद्य उद्योग में हल्दी का इस्तेमाल बढ़ना भी है।

अमेरिका के खाद्य एवं पेय क्षेत्र में हल्दी संबंधी चीजों के साथ हल्दी के रस की मांग ज्यादा देखी गई है। बीते पांच वर्षों में अमेरिका का भारत से हल्दी का आयात 2011 के 14.2 मिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2015 में 15.9 मिलियन यूएस डॉलर का हो गया है।

मलेशिया दुनिया में हल्दी का पांचवां सबसे बड़ा आयातक देश है। भारत मलेशिया को हल्दी का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता देश है। 2015 में मलेशिया के कुल हल्दी आयात की 90.8 प्रतिशत आपूर्ति भारत से ही की गई। अन्य प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में चीन (4.3%), म्यांमार (2.0%) और इंडोनेशिया (1.4%) शामिल रहे। 2015 में भारत से हल्दी निर्यात के लिए मलेशिया तीसरा सबसे बड़ा देश रहा, जिसे 10.1 मिलियन यूएस डॉलर की हल्दी निर्यात की गई।

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) दुनिया का छठा सबसे बड़ा हल्दी आयातक है और भारत इस देश को सबसे बड़े हल्दी आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। 2015 में यूएई को भारत से 8.1 मिलियन यूएस डॉलर की हल्दी निर्यात की गई। हालांकि यूएई को बीते साल के मुकाबले 2015 में हल्दी के निर्यात में 4 प्रतिशत की गिरावट देखी गई थी।

वर्ष 2015 में यूनाइटेड किंगडम (यूके) को भारत से 6.7 मिलियन यूएस डॉलर की हल्दी निर्यात की गई। यूके के कुल हल्दी आयात में भारत का हिस्सा 81% रहा। इसके बाद फ्रांस, नीदरलैंड और पोलैंड का क्रमशः 7.8%, 4.8% और 2.0% हिस्सा रहा। वैश्विक रूप से भारत के कुल हल्दी निर्यात का 4.8% हिस्सा यूके का रहा।

संदर्भ : विभिन्न उद्योग स्रोत

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) ने लघु एवं मध्यमउद्यमों पर विशेष बल के साथ भावी बाजार प्रवेश व्यवस्था के रूप में ऋण-व्यवस्थाएं (एलओसी) प्रदान करने पर विशेष जोर दिया है। ये ऋण-व्यवस्थाएं भारतीय निर्यातक समुदाय को जोखिम और दायित्व रहित निर्यात वित्तपोषण का विकल्प प्रदान करती हैं, जो उन्हें नए बाजारों में पहुंच बढ़ाने और मौजूदा विदेशी बाजारों में निर्यात बढ़ाने में मदद करती हैं। एक्ज़िम बैंकविदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है, जो उन देशों के क्रेताओं को भारत से आस्थगित भुगतान शर्तों पर विकासपरक तथा बुनियादी संरचनापरियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातक को संविदा मूल्य के 100 प्रतिशत की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल संविदा मूल्य के कम से कम 75 प्रतिशत के माल एवं सेवाओं का शिपमेंट भारत से किया गया हो। ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है।

हाल के वर्षों में ऋण-व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं।

बैंक अब तक अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, यूरोप औरसीआईएस क्षेत्रों के 63 देशों को 14.82 बिलियन यूएस डॉलर की 204 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान कर चुका है, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्द्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

एक्ज़िम बैंक ने भारत सरकार के आदेश पर और उसके सहयोग से अप्रैल-जून 2016 के दौरान निम्नलिखित एक ऋण-व्यवस्था प्रदान की :

I) एक्ज़िम बैंक द्वारा मंगोलिया सरकार को 1 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण-व्यवस्था रेलवे और संबंधित ढांचागत परियोजनाओं के लिए प्रदान की गई है। इस ऋण-व्यवस्था सहित एक्ज़िम बैंक अब तक मंगोलिया सरकार को भारत सरकार की ओर से 1.02 बिलियन यूएस डॉलर की दो ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान कर चुका है। पहली ऋण-व्यवस्था जुलाई 2011 में 20 मिलियन यूएस डॉलर की थी, जो मंगोलिया में भारत-मंगोलिया जॉइंट इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एजुकेशन एंड आउटसोर्सिंग सेंटर (आईएमजेआईटी) प्रोजेक्ट के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई थी।

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें :

श्री नदीम पंजेतन
मुख्य महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात-आयात बैंक
केन्द्र एक भवन, 21वीं मंज़िल
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल
कफ़ परेड, मुंबई- 400 005.

टेलीफोन : (22) 22861561
फैक्स : (22) 22823394

ई-मेल : eximloceximbankindia.in

ऋण-व्यवस्था सक्सेस स्टोरी : जांबिया

ऋण-व्यवस्था राशि :

29.03 मिलियन यूएस डॉलर

उद्देश्य : इतेज़ी-तेज़ी हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट

240 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य वाली 120 मेगावाट की इतेज़ी तेज़ी हाइड्रो पावर परियोजना इतेज़ी-तेज़ी पावर कॉर्पोरेशन (आईटीपीसी) द्वारा विकसित की गई है। यह जांबिया के बिजली क्षेत्र में अपनी तरह की पहली सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) वाली परियोजना थी। वर्तमान में इसका स्वामित्व भारत की टाटा पावर कँपनी और जांबिया की जेस्को के पास है, जिसमें दोनों का 50:50 हिस्सा है और इसे अफ्रीकी विकास बैंक तथा एक्ज़िम बैंक द्वारा अन्य ऋणदाताओं के साथ संयुक्त रूप से वित्तपोषित किया गया है।

परियोजना के लिए एल्स्टम इंडिया द्वारा ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण उपकरणों जैसे-टर्बाइन, जनरेटर, मेन इनलेट वाल्व, स्पीड गवर्नर और एक्साइटेशन सिस्टम की आपूर्ति की गई है। परियोजना अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार बिजली उत्पादन कर रही है। यह अफ्रीका में पहली पीपीपी हाइड्रो पावर परियोजना है।

8 तिमाही गतिविधियां

एक्ज़िम बैंक और इस्लामिक कॉर्पोरेशन फॉर द डेवलपमेंट ऑफ द प्राइवेट सेक्टर (आईसीडी) ने द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) और इस्लामिक डेवलपमेंट बैंक (आईडीबी) समूह की निजी शाखा इस्लामिक कॉर्पोरेशन फॉर द डेवलपमेंट ऑफ द प्राइवेट सेक्टर (आईसीडी) ने एक सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस सहमति ज्ञापन में अन्य क्षेत्रों में सहयोग के साथ-साथ आईसीडी के सदस्य देशों को भारत से माल व सेवाओं के निर्यात को सुगम बनाने के लिए आईसीडी को 100 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण व्यवस्था प्रदान करने का भी प्रस्ताव रखता है। एक्ज़िम बैंक की ऋण व्यवस्थाएं एक तरह से मध्यस्थ का काम करती हैं और विदेशी खरीदारों को भारतीय माल और सेवाएं आयात करने के लिए ऋण प्रदान करती हैं। समझौते के तहत व्यापार संबंधी मामलों और भारतीय कँपनियों के लिए आईसीडी सदस्य देशों में कारोबार की संभावनाओं की जानकारी का आदान-प्रदान भी किया जाएगा।

एक्ज़िम बैंक और रूस के वेनेश्कोनॉम बैंक ने किए सहयोग करार पर हस्ताक्षर

एक्ज़िम बैंक और रूस के द स्टेट कॉर्पोरेशन बैंक फॉर डेवलपमेंट एंड फॉरेन इकोनॉमिक अफेयर्स (वेनेश्को-नॉम बैंक) ने चीन की राजधानी बीजिंग में डी-20 सम्मेलन से इतर 27 मई, 2016 को एक सहयोग करार पर हस्ताक्षर किए। इस सहयोग करार का प्रमुख उद्देश्य संस्थागत सहयोग को औपचारिक रूप देना है, ताकि दोनों संस्थान दोनों देशों के समान हितों वाले क्षेत्रों की आसानी से पहचान कर सकें और उन पर परस्पर सहयोग से काम कर सकें। सहयोग करार पर भारतीय निर्यात-आयात बैंक के उप प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना और वेनेश्कोनॉम बैंक के प्रथम उपाध्यक्ष और बोर्ड सदस्य श्री निकोले सेखोम्स्की ने हस्ताक्षर किए। सहयोग करार के तहत व्यापक क्षेत्रों में ढांचागत परियोजनाएं, निर्यात वित्तपोषण/निर्यात बीमा और गारंटियां शामिल हैं। इसके साथ ही इसमें परियोजनाओं का मिलकर वित्तपोषण करना, ऋण विस्तार में सहयोग करना और आर्थिक एवं वित्तीय स्थितियों तथा भारत और रूस में अन्य विकास परियोजनाओं की जानकारियां साझा करना भी शामिल है।

एक्ज़िम बैंक का अध्ययनः रक्षा क्षेत्र में सुधार से बढ़ेगा निर्यात

एक्ज़िम बैंक ने रक्षा उपकरण उद्योगः आत्म निर्भरता एवं निर्यात का संवर्द्धन शीर्षक से एक विस्तृत अध्ययन किया है। इसकी पहली प्रति माननीय विदेश राज्य मंत्री तथा सांख्यिकी और कार्यान्वयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जनरल डॉ. वीके सिंह (सेवानिवृत्त) को नई दिल्ली में 17 मई, 2016 को भेंट की गई। अध्ययन में रेखांकित किया गया है कि भारतीय रक्षा की स्थिति क्षेत्र दूसरे देशों से अलग है, जहा 80 प्रतिशत से ज्यादा वेल्यू एडिशन इंटीग्रेटर स्टेज पर होता है, जबकि उपकरण आपूर्ति करने वाले महज 20 प्रतिशत ही हैं, जिनमें ज्यादातर लघु एवं मध्यम उद्योग होते हैं। यह स्थिति इस क्षेत्र में निजी कँपनियों को बढ़ने से रोकती है और इससे शोध एवं विकास की संभावनाएं भी प्रभावित होती हैं। इसके अलावा भारतीय रक्षा क्षेत्र में कार्य क्षमता (श्रम उत्पादकता के आधार पर) भी उपभोक्ता माल एवं परिवहन उपकरण जैसे क्षेत्रों के मुकाबले कम है। इस मामले में भी भारतीय रक्षा क्षेत्र यूके जैसे क्षेत्रों से पीछे रह जाता है, जहां अंतरिक्ष और रक्षा क्षेत्र में श्रम उत्पादकता यू के की तमाम दूसरी कँपनियों के मुकाबले 8 फीसदी ज्यादा है।

एक्ज़िम बैंक ने सुझाया- स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विकास में भारत के अनुभवों का लाभ उठा सकता है अफ्रीका

एक्ज़िम बैंक का शोध अध्ययन भारत-अफ्रीका स्वास्थ्य सेवा सहयोगः आगे की राहजांबिया के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जोसेफ कसोंदे द्वारा जारी किया गया। यह शोध अध्ययन भारतीय वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग में अतिरिक्त सचिव श्री दिनेश शर्माऔर जांबिया में भारत के उच्चायुक्त श्री गद्दाम धर्मेंद्र की उपस्थिति में जारी किया गया। जांबिया के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जोसेफ कसोंदे ने जांबिया में 650 स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करने में भारत सरकार के सहयोग के लिए सराहना की। उन्होंने भरोसा जताया कि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी और भारत के अनुभवों का लाभ अफ्रीका को मिलेगा और वहां के नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाओं के लिए देश से बाहर जाने की जरूरत नहीं होगी।

अखिल भारतीय सोलर रूफटॉप वर्कशॉप में जारी हुआ एक्ज़िम बैंक का अध्ययन - अंतरराष्ट्रीय सौर सहयोग : संभावनाओं का विकास

एक्ज़िम बैंक का शोध अध्ययन अंतरराष्ट्रीय सौर सहयोग : संभावनाओं का विकासनई दिल्ली में हुई अखिल भारतीय सोलर रूफटॉप वर्कशॉप के दौरान भारत के माननीय ऊर्जा, कोयला और अक्षय ऊर्जा मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा जारी किया गया। यह शोध अध्ययन श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, सचिव, समन्वय एवं लोक शिकायत; कैबिनेट सचिव श्री पी.के. सिन्हा; प्रधानमंत्री के अतिरिक्त प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा; अक्षय ऊर्जा मंत्रालय में सचिव श्री उपेंद्र त्रिपाठी और एक्ज़िम बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री यदुवेन्द्र माथुर की अध्यक्षता में जारी किया गया। एक्ज़िम बैंक भारत में आईएसए सचिवालय की सलाहकार परिषद का सदस्य है।

एक्ज़िम बैंक ने कोत दिवार के आबिदजान में शुरू किया अपना कार्यालय

पश्चिम अफ्रीकी देश कोत दिवार की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले आबिदजान में भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) के प्रतिनिधि कार्यालय का 14 जून, 2016 का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। कोत दिवार सरकार ने आबिदजान में एक्ज़िम बैंक के प्रतिनिधि कार्यालय को अकॉर्ड डि सीज का दर्जा प्रदान किया है. तत्संबंधी करार पर एक्ज़िम बैंक की ओर से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री यदुवेन्द्र माथुर,आईएएस और कोत दिवार के माननीय विदेश मंत्री श्री अबदल्ला एलबर्ट ट्वैकेस मैब्री ने 14 जून, 2016 को हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणब मुखर्जी और कोत दिवार के राष्ट्रपति महोदय श्री अलासैन उवातारा भी मौजूद थे। एक्ज़िम बैंक का आबिदजान प्रतिनिधि कार्यालय मुख्य रूप से बेनिन, बुर्किना फासो, कैमरून, केप वर्दे, सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, त्शाद, कोत दिवार, इक्वाटोरियल गिनिया, गैबॉन, घाना, गिनी, गिनी-बिसाउ, लाइबेरिया, माली, मौरिटानिया, नाइजर, साओ टोम प्रिंसिपे, सेनेगल, सिएरा लिओन और टोगो में एक्ज़िम बैंक के व्यावसायिक हितों को पूरा करने में मदद करेगा।

भारतीय टेक्सटाइल उद्योग : हालिया ट्रेंड और संभावनाएं

टेक्सटाइल उद्योग का भारत के आर्थिक विकास पर जबर्दस्त प्रभाव है, क्योंकि यह कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता क्षेत्र है। औद्योगिक उत्पादन, रोजगार एवं निर्यात में अपने योगदान के माध्यम से यह उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह उद्योग करीब 45 मिलियन लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है। अर्थव्यवस्था में योगदान की बात करें तो विनिर्माण उत्पादन का लगभग 10%, राष्ट्रीय जीडीपी का 2% और देश को निर्यात से होने वाली आय का 13% इसी उद्योग का हिस्सा है।

उत्पादन में मध्यम वृद्धि

वर्ष 2015-16 के दौरान मानव निर्मित फिलामेंट यार्न को छोड़ दें तो फाइबर और यार्न की ज्यादातर श्रेणियों के उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष के दौरान कुल स्पन यार्न उत्पादन जहां 3.2% की दर से बढ़ा, वहीं मानव निर्मित फिलामेंट यार्न के उत्पादन में 6.7% की गिरावट दर्ज की गई (एक्ज़िबिट)। यह गिरावट मांग में मंदी आने के चलते पॉलिस्टर फिलामेंट यार्न में तेजी से आई गिरावट के कारण देखी गई।

भारत में कपड़ा उत्पादन में 2015-16 के दौरान 0.4% की मामूली बढ़ोत्तरी हुई। वर्ष के दौरान कॉटन फैब्रिक्स की अच्छी मांग के चलते इसका उत्पादन तेजी से बढ़ा। लेकिन बुने हुए सिंथेटिक फैब्रिक में गिरावट के चलते कुल फैब्रिक उत्पादन में ज्यादा बढ़ोत्तरी नहीं हो पाई। इस वर्ष के क्षेत्रवार आंकड़े बताते हैं कि मिल सेक्टर में 6.9% की गिरावट दर्ज की गई। फैब्रिक निर्यात में 60% से ज्यादा हिस्सा रखने वाले पावरलूम सेक्टर में भी 2015-16 के दौरान उत्पादन में 2.0% की गिरावट दर्ज की गई (एक्जिबिट)।

व्यापार

भारत के कुल निर्यात में टेक्सटाइल और रेडीमेड गारमेंट्स का हिस्सा बीते 15 वर्षों में कम हुआ है। वर्ष 2000-01 में टेक्सटाइल और रेडीमेड गारमेंट्स (कार्पेट सहित) का हिस्सा भारत के कुल निर्यात में 25.6% था, जो 2015-16 में गिरकर 14% पर आ गया है। तथापि, टेक्सटाइल्स के वैश्विक निर्यात में भारत का हिस्सा बीते वर्षों में बढ़ा है। यह वर्ष 2000 में 3.0% था, जो 2014 में बढ़कर 3.8% हो गया। 2014 में भारत टेक्सटाइल और परिधानों का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक रहा था।

2015-16 में भारत के रेडीमेड गारमेंट्स के निर्यात में कमी जरूर आई, फिर भी भारत के कुल रेडीमेड गारमेंट्स का निर्यात 0.8% बढ़ा और 17.0 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात को रेडीमेड गारमेंट के निर्यात में अच्छी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। लेकिन मांग मंदी पड़ने के चलते यूरोप को निर्यात में गिरावट आई।

सरकारी प्रोत्साहन

सरकार ने निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से टेक्सटाइल सेक्टर के लिए 60 अरब रुपए के विशेष पैकेज को मंजूरी दी है। पैकेज में बढ़ी हुई ड्यूटी ड्रॉबैक कवरेज, उत्पादकता बढ़ाने के लिए श्रम कानूनों में नरमी, आयकर छूट में बढ़ोत्तरी जैसे कई उपाय शामिल किए गए हैं।

श्रम कानूनों को नरम बनाने के लिए कामगारों के लिए ओवरटाइम घंटे बढ़ाना और गारमेंट सेक्टर की सीजनल प्रवृत्ति को देखते हुए स्थायी अवधि के रोजगार देने जैसे उपाय किए गए हैं। ए-टीयूएफएस के अंतर्गत गारमेंट सेक्टर के लिए सब्सिडी भी 15% से बढ़ाकर 25% कर दी गई है। इन उपायों से इस क्षेत्र में निवेश और रोजगार बढ़ेगा।

टेक्सटाइल सेक्टर में घरेलू वेल्यू एडिशन को प्रोत्साहन देने के लिए विशिष्ट फाइबरों और यार्न पर बेसिक कस्टम ड्यूटी भी 2016 के केंद्रीय बजट में घटा दी गई है। मौजूदा कस्टम ड्यूटी को 5% से घटाकर 2.5% कर दिया गया है। पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में किए गए निर्यात के एफओबी के एक प्रतिशत के बराबर मूल्य के कुछ निश्चित फैब्रिक के आयात पर बेसिक कस्टम ड्यूटी से भी छूट दे दी गई है।

सरकार द्वारा किए गए अन्य प्रमुख उपायों में भारत से मर्चेंडाइज निर्यात योजना के अंतर्गत बाजार का विस्तार, ड्यूटी ड्रॉबैक दरों में 2% की वृद्धि और रुपया निर्यात ऋण के प्री और पोस्ट शिपमेंट पर 3% का ब्याज समकरण शामिल हैं।

संभावनाएं

अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से लगातार बढ़ती मांग और विभिन्न सरकारी उपायों से गारमेंट सेक्टर में मध्यम स्तर की तेजी बनी रहने की उम्मीद है। परिधानों, होम टेक्सटाइल और टेक्निकल टेक्सटाइल की तेजी से बढ़ती मांग का भी यार्न और फैब्रिक पर सकारात्मक असर होगा। वहीं दूसरी ओर, भारतीय कॉटन यार्न के सबसे बड़े आयातक देश चीन द्वारा शुरू की गई रिजर्व कॉटन की नीलामी से भारत से इन उत्पादों का निर्यात प्रभावित हो सकता है।

(एक्ज़िबिट) टेक्सटाइल उत्पादन में वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन (2015-16)

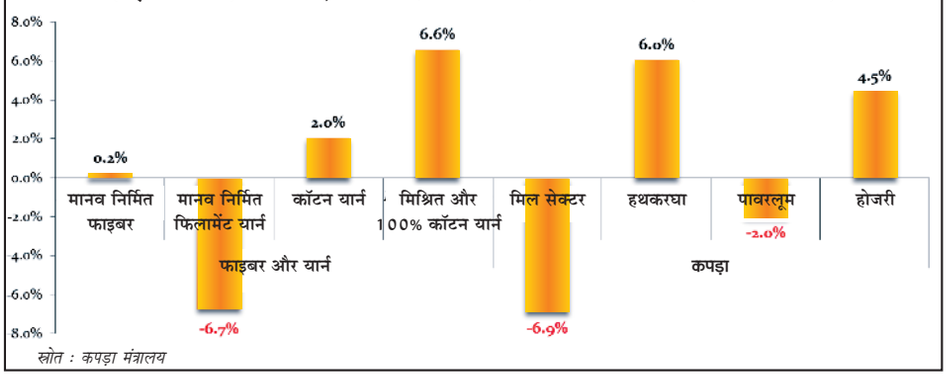

स्रोत : कपड़ा मंत्रालय

10 रत्न और आभूषण

संक्षिप्त विवरण

रत्न और आभूषण सेक्टर भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्पूर्ण भूमिका निभाता है। देश की जीडीपी में इसका 6-7% योगदान होता है। सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक यह क्षेत्र अत्यधिक निर्यात उन्मुख और रोजगार परक है।

भारत में रत्न और आभूषण सेक्टर के दो बड़े खंड हैं- सोने और हीरे के गहने। स्वर्ण आभूषणों का एक बड़ा हिस्सा जहां भारत में बनता है, वहीं अपरिष्कृत हीरों का एक बड़ा हिस्सा आयात भी किया जाता है। फिर उसे तराशकर और खूबसूरत आकार में ढालकर भारत से निर्यात किया जाता है।

भारतीय परिदृश्य

भारत हीरों की कटिंग और पॉलिश के लिए दुनिया के सबसे बड़े केंद्रों में से एक है। कटिंग और पॉलिशिंग उद्योग के लिए सरकारी नीतियां भी सहयोगात्मक हैं। रत्न और आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद् के आंकड़ों के अनुसार दुनिया का 95% हीरा भारत से ही निर्यात होता है।

2015 में भारत दुनिया का सबसे बड़ा स्वर्ण उपभोक्ता देश रहा था, यहां 848.9 टन सोने की खपत हुई थी। यह खपत उस वर्ष दुनिया की कुल खपत (3426.5 टन) की एक चौथाई है (टेबल)। आयात किया गया अधिकांश सोना गहने बनाने के काम में ले लिया जाता है। भारत में सोने के गहनों की मांग का सीधा संबंध सामाजिक और धार्मिक परिपाटियों से है। भारत में सोने को बचत और निवेश का भी एक महत्त्वपूर्ण तरीका समझा जाता है।

भारतीय रत्न और आभूषण उद्योग को मार्च 2015 की अंतिम तिमाही में बिक्री में गिरावट का सामना करना पड़ा। इस तिमाही के दौरान मांग में कमी आने के चलते उद्योग में गिरावट आई। विश्व स्वर्ण परिषद् (वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल) की एक रिपोर्ट के अनुसार मार्च 2016 तिमाही के दौरान भारत में सोने की मांग बीते सात वर्षों में सबसे कम रही। सोने की कीमतों में 3.3% की बढ़ोत्तरी और ज्वैलरों की 43 दिन की हड़ताल से सोने की मांग बुरी तरह प्रभावित हुई।

2015-16 के दौरान रत्न और आभूषणों के निर्यात में 4.42% की गिरावट दर्ज की गई और यह 39.4 बिलियन यूएस डॉलर का ही रहा। भारत के कुल निर्यात में इस सेक्टर का योगदान करीब 15.05% के आसपास रहा। संयुक्त अरब अमीरात, हांगकांग और अमेरिका, बेल्जियम और इजरायल को सबसे ज्यादा निर्यात किया गया। वहीं दूसरी ओर, 2015-16 में आयात में वर्ष-दर-वर्ष 9.5% की गिरावट दर्ज की गई और यह 56.4 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। भारत के कुल आयात में इस सेक्टर का हिस्सा 14.84% रहा।

वर्ष 2015-16 के दौरान हीरों के निर्यात में भी गिरावट दर्ज की गई। हीरों का निर्यात 10.1% गिरकर 21.7 बिलियन यूएस डॉलर का ही रह गया। हीरे के निर्यात में सबसे ज्यादा कमी हांगकांग, बेल्जियम, संयुक्त अरब अमीरात और इजरायल के साथ दर्ज की गई। भारत से हीरों के दूसरे सबसे बड़े आयातक अमेरिका को भी निर्यात में 1.4% की ही वृद्धि हुई।

अप्रैल 2000 से मार्च 2016 की अवधि के दौरान हीरे और सोने के आभूषणों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) 772.05 मिलियन यूएस डॉलर का रहा। यह भारत में कुल एफडीआई आवक का 0.27% है। इस सेक्टर में ऑटोमैटिक रूट से 100% एफडीआई की अनुमति है।

सोने की कीमतें

अच्छी आर्थिक स्थिति को देखते हुए यूएस फेडरल रिजर्व ने 9.5 साल में पहली बार ब्याज दरें बढ़ाई। दिसंबर 2015 में ब्याज दरें 25 बेसिस पॉइंट बढ़ाई गईं। इससे बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड निवेशों में निवेश ज्यादा लुभावना हुआ। ब्याज दर बढ़ने के अगले कुछ महीनों में ऊंचे बॉन्ड यील्ड के चलते यूएस डॉलर कुछ प्रमुख मुद्राओं की तुलना में मजबूत हुआ। यूएस डॉलर में सोने की खरीद अच्छी होने के चलते कीमतें गिरीं और इस तरह अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमतें 2015-16 में 7.8% गिरकर 1,150.6 यूएस डॉलर प्रति ट्रॉय आउन्स हो गईं।

संभावनाएं

वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार के साथ अमेरिका और हांगकांग से गहनों की मांग में तेजी आने और बेहतर ग्रोथ की संभावना है। इक्विटी बाजार में अस्थिरता, कमजोर घरेलू मुद्रा और वैश्विक रूप से उच्च आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितता के चलते लोग सोने को सुरक्षित रखना चाहते हैं। इससे भी सोने के सिक्कों और छड़ों की मांग में सुधार आने की संभावना है। कटिंग वाले और पॉलिश किए हुए हीरों के निर्यात में ज्यादा बढ़ोत्तरी की संभावना नहीं है, क्योंकि अमेरिकी बाजार में हीरों के आभूषणों की खपत में वृद्धि होती भी है तो वह चीन और हांगकांग में कम बिक्री से बराबर हो जाएगी।

टेबल : भारत में सोने की खपत (टन में)

अवधि	आभूषण	निवल खुदरा निवेश	कुल	% कुल वृद्धि
2006	526.2	195.7	721.9	0.04
2007	551.7	217.5	769.2	6.55
2008	501.6	211.0	712.6	1.04
2009	442.4	136.1	578.5	-18.82
2010	657.4	348.9	1006.3	2.04
2011	567.4	366.0	933.4	-7.24
2012	552.0	312.2	864.2	-7.41
2013	612.7	362.1	974.8	12.80
2014	603.9	206.9	810.8	-16.8
2015	654.3	194.6	848.9	4.7

स्रोत : विश्व स्वर्ण परिषद्

हस्तशिल्प और हथकरघा उद्योग को एक्ज़िम बैंक का सहयोग

अप्रैल 2016 में हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् की ओर से नई दिल्ली में एक व्यापार मेला आयोजित कराया गया था। इस दौरान घरेलू फर्नीचर, फर्निशिंग, साज-सज्जा और किचनवेयर, टेबलवेयर, गार्डनवेयर, बाथरूम एसेसरीज सहित हाउसहोल्ड उत्पादों जैसे तकरीबन सभी बड़े क्षेत्रों को कवर किया गया और बी2बी (बिजनेस टू बिजनेस) शो भी किए गए।

एक्ज़िम बैंक ने नई दिल्ली में आयोजित इस होम एक्सपो इंडिया में भाग लेने के लिए केरल स्थित एक फेयर ट्रेड संगठन को सहयोग प्रदान किया था। यह संगठन केरल की परंपरागत हथकरघा कला के जरिए घरेलू साज-सज्जा के सामान बनाता है, जिसे स्थानीय भाषा में थोरटू फैब्रिक कहा जाता है।

केरल स्थित इस संगठन को होम एक्सपो इंडिया में एक बूथ के लिए सहयोग प्रदान किया गया। इसका उद्देश्य नए बाजार अवसर तलाशने और बड़ी संख्या में घरेलू एवं विदेशी खरीदारों तक पहुंच बनाने में कंपनी की मदद करना था। इस चार दिवसीय मेले के दौरान 100 से ज्यादा विजिटर और 20 से ज्यादा विदेशी लाइफस्टाइल स्टोर, स्पेशलिटी स्टोर, रिटेलर, इंटीरियर डिजाइनर, ऑनलाइन रिटेलर, आयातक और खरीदार एजेंट इस बूथ पर आए। इसके साथ हीघरेलू बाजारों के साथ-साथ विदेशी बाजारों से भी उत्पादों की जानकारी ली गई।

एक्ज़िम बैंक ने भारत में एक लोकप्रिय ई-कॉमर्स वेबसाइट और मुंबई में अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे के टर्मिनल 2 पर एक क्राफ्ट स्टोर के साथ मिलकर शिल्पियों और ग्रासरूट उद्यमों के उत्पादों को प्रदर्शित करने में भी सहयोग किया है। इन उत्पादों में पट्टचित्र पेंटिंग, केले के फाइबर से बने रनर और मैट, स्टेनलेस स्टील इनैमलवेयर, हैंड प्रिंटेड किचनवेयर, रीसाइकल्ड प्लास्टिक से बने उत्पाद और चमड़े की कठपुतलियां प्रमुख रूप से शामिल हैं। सभी उत्पाद बहुत से देशी-विदेशी खरीदारों का ध्यान आकर्षित करते हैं, जिससे इन शिल्पियों और ग्रासरूट स्तर के उद्यमियों को नए बाजारों तक पहुंचने में मदद मिलती है। इन सभी श्रेणियों में करीब 400 उत्पादों से 5,46,185 रुपए की बिक्री हुई है।

एक्ज़िम बैंक अपनी मार्केटिंग सलाहाकारी सेवाओं के जरिए भारतीय कँपनियों की निर्यात क्षमता बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी बनाने के लिए संवर्द्धक की भूमिका निभाता है। एक्ज़िम बैंक उन्हें विदेशों में अवसरों की तलाश करने में सहयोग करता है। इसके साथ ही भारतीय निर्यातक कँपनियों को उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए विदेशों में वितरक / खरीदार / भागीदारों की तलाश में सहयोग कर उनके वैश्वीकरण प्रयासों में भी मदद करता है। बैंक कौशल विकास, उत्पाद विकास और उत्पादों को निर्यात योग्य बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान कर ग्रासरूट स्तर के उद्यमों का सहयोग और संवर्द्धन करता है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें : ईमेल :
maseximbankindia.in

एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र की गतिविधियां

अप्रैल-जून 2016

एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र (ईसीएल) देशभर के टियरट और टियर II शहरों में सेमिनारों का आयोजन करता रहा है। इन सेमिनारों में भारतीय निर्यात संगठन संघ (फिओ), विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी), कस्टम्स, ईसीजीसी और अग्रणी वाणिज्यिक बैंकों के वक्ताओं ने जानकारी प्रदान की। इस तरह सेमिनारों / कार्यशालाओं ने भारत के व्यापार और निवेश के विभिन्न भागीदारों को एक मंच पर लाने में योगदान दिया और इनमें भारतीय निर्यातकों / आयातकों से जुड़े मसलों को संबोधित किया गया।

तिमाही के दौरान ईसीएल ने फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) तथा फिओ के सहयोग से निम्नलिखित सात सेमिनार आयोजित किए :

1. फिक्की के साथ मिलकर ब्रिक्स देशों के साथ व्यापार और निवेश को बढ़ावा विषय पर 12 अप्रैल, 2016 को कोच्चि में सेमिनार
2. फिओ के साथ मिलकर भारत में विदेश व्यापार बढ़ाना विषय पर 26 अप्रैल, 2016 को विजयवाड़ा में सेमिनार
3. फिओ के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार का सुगमीकरण विषय पर 31 मई, 2016 को सूरत में सेमिनार
4. फिओ के साथ विदेश व्यापार में अवसर और चुनौतियां विषय पर 10 जून, 2016 को आगरा में सेमिनार
5. फिओ के साथ मिलकर निर्यात ऋण और निर्यात सुगमीकरण विषय पर 17 जून, 2016 को सिक्किम में सेमिनार
6. फिओ के साथ मिलकर 21 जून, 2016 को लखनऊ में निर्यातकों के साथ ओपन हाउस सम्मेलन
7. फिक्की के साथ मिलकर ब्रिक्स देशों के साथ व्यापार और निवेश को बढ़ावा विषय पर 22 जून, 2016 को कोच्चि में सेमिनार

आगामी कार्यक्रम :

''उभरता वैश्विक व्यापार परिदृश्य-भारत के निर्यात-आयात पर असर'' विषय पर कोलकाता में सेमिनार।

पुस्तक समीक्षा

व्यापार वित्त और एसएमई : प्रावधानों की विषमताएं दूर करना (डब्ल्यूटीओ - 2016)

विश्व व्यापार संगठन की यह किताब लघु और मध्यम उद्यमों (एसएमई) की व्यापार वित्त तक पहुंच के अभाव पर केंद्रित है और इस विषमता को दूर करने के उपाय सुझाती है। इसमें कहा गया है कि व्यापार वित्त का अभाव व्यापार के लिए एक प्रमुख नॉन टैरिफ बाधा है, खास तौर पर विकासशील देशों के लिए। इसमें यह भी कहा गया है कि एसएमई के सामने सस्ता व्यापार वित्त सबसे बड़ी बाधा है।

किताब में उन उपायों का भी विशेष रूप से उल्लेख किया गया है जो इस स्थिति से निपटने के लिए किए गए जा चुके हैं। मोटे तौर पर ये तीन उपाय हैं। पहला, वैश्विक वित्तीय संस्थानों से संबंध बनाए रखने के लिए प्रोत्साहन देना और यह सुनिश्चित करना कि विनियमन प्रतिबंधात्मक न हों। दूसरा, स्थानीय वित्तीय संस्थानों की क्षमता बढ़ाना। तीसरा, बहुपक्षीय विकास बैंकों के जरिए व्यापार वित्त की उपलब्धता बढ़ाने के लिए सहयोग करना।

व्यापार वित्त को सर्वसुलभ बनाने के लिए कुछ सिफारिशें भी की गई हैं। मसलन, मौजूदा व्यापार वित्त सुगमीकरण कार्यक्रम को 50 बिलियन यूएस डॉलर तक बढ़ाकर वित्तपोषण विषमता को कम करना; स्थानीय बैंकिंग सेक्टर में व्यापार वित्त संभालने के लिए अगले पांच वर्षों में 5000 प्रोफेशनलों को प्रशिक्षण देकर जानकारीके अभाव को दूर करना; व्यापार वित्त विनियामकों के साथ खुली चर्चा करते रहना, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि विनियमों में व्यापार और विकास संबंधी सिफारिशें लागू हो रही हैं; और भविष्य के किसी भी संकट के संबंध में खामियों को दूर करने के लिए व्यापार वित्त प्रावधानों की निगरानी करना।

12 देशों का सूक्ष्मावलोकन

तंजानिया

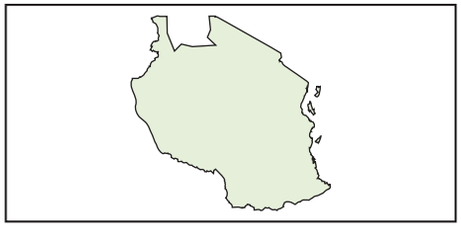

तंजानिया की आर्थिक वृद्धि दर बीते एक दशक में औसतन 6.5% प्रति वर्ष रही है। निर्माण गतिविधियों, सेवाओं और आधारभूत विनिर्माण के चलते यह दर बनी हुई है। इंफ्रास्ट्रक्चर में सार्वजनिक निवेश में तेजी के चलते 2016 के दौरान जीडीपी के 7% की दर से बढ़ने के आसार हैं। यह निवेश विशेष रूप से तंजानिया को इसके बंदरगाह विहीन पड़ोसियों से जोड़ने के लिए स्टैंडर्ड गेज रेलवे का निर्माण, देश के प्रचुर गैस भंडारों को भुनाने के लिए लिक्विफाइड प्राकृतिक गैस (एलएनजी) संयंत्र की स्थापना, बागामोयो में नए बंदरगाह का निर्माण और यूगांडा तंजानिया के टैंगा बंदरगाह से जोड़ने के लिए ऑयल पाइपलाइन का निर्माण और ग्रामीण इलाकों में घरों तक बिजली पहुंचाने संबंधी परियोजनाओं में किए जाने की योजना है। लेकिन जुलाई 2016 में तंजानिया को झटका देते हुए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने चेतावनी दी है कि इसकी महत्त्वाकांक्षी इंफ्रा परियोजनाओं में राजकोषीय स्थिति को अनदेखा किया गया है और सुझाव दिया कि तंजानिया को अपना राजस्व बढ़ाने और राजकोषीय स्थति को मजबूत रखने के लिए सार्वजनिक व्यय की वरीयता निर्धारित करने की जरूरत है।

रूस

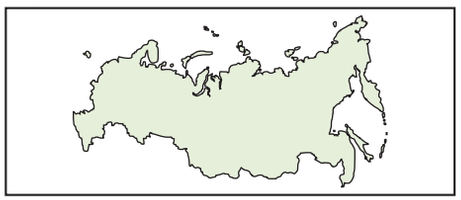

रूस की अर्थव्यवस्था में बीते छह वर्षों में सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई और 2015 में जीडीपी में 3.5% की गिरावट आई। यह स्थिति मुख्य रूप से घरेलू खपत और निवेश में आई भारी गिरावट के चलते बनी। तेजी से गिरे कॉर्पोरेट लाभ और कम मांग के बीच अधिक उत्पादन क्षमता से पूंजीगत व्यय कम करना पड़ा। उसके बाद से रूस में आर्थिक मंदी मध्यम स्तर पर है और आईएमएफ के अनुसार 2016 में अर्थव्यवस्था में 0.8% की मामूली वृद्धि होने के आसार हैं। उपभोक्ता सेंटिमेंट में सुधार से सेवा क्षेत्र मजबूत हुआ है, जिससे महंगाई कम हुई है और ब्याज दरें घटी हैं। यूरोपीय संघ ने हाल ही में रूस के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध छह महीने यानी 31 जनवरी, 2017 तक और बढ़ा दिए हैं। इन प्रतिबंधों के साथ-साथ रूस द्वारा यूरोपीय संघ के खिलाफ उठाए गए कदमों का सामना करने वाली पश्चिमी फर्मों को अपने उत्पादों की मांग में मंदी का सामना करना पड़ेगा और इसलिए वे निर्यात के लिए दूसरे भौगोलिक क्षेत्र तलाशेंगी। इसमें कृषि और ऊर्जा क्षेत्र भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इन प्रतिबंधों का दुष्प्रभाव रूस की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा, जिससे घरेलू मांग के भी कम होने के आसार हैं।

पेरू

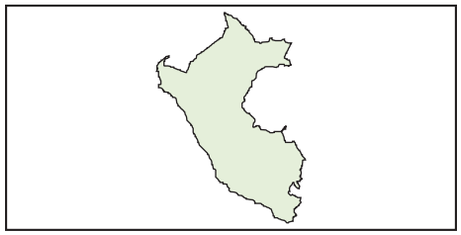

बीते एक दशक में पेरू इस क्षेत्र की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक रहा है। इसकी औसत विकास दर 5.9% और महंगाई दर औसत 2.9% के आसपास रही है। अर्थव्यवस्था में यह तेजी बाहरी परिवेश, सुदृढ़ वृहद् आर्थिक नीतियों और विभिन्न क्षेत्रों में ढांचागत सुधार और कम महंगाई के चलते रही। 2014 में थोड़ी गिरावट के बाद जीडीपी ग्रोथ में 2015 में सुधार आया और यह 2.4% से बढ़कर 3.3% हो गई और इंवेन्टरी (मुख्य रूप से कॉपर) और निर्यात बढ़ा। कारोबारी विश्वास की कमी, कुछ खनन परियोजनाओं के क्रियान्वयन में देरी और रियल एस्टेट में मंदी के बावजूद अर्थव्यवस्था में यह तेजी दर्ज की गई। हालांकि महंगाई दर स्थानीय मुद्रा के अवमूल्यीकरण के चलते 4.4% के लक्ष्य को पार कर गई और रियल एस्टेट तथा बिजली की कीमतों में उछाल आ गया। 2016 में आर्थिक वृद्धि दर 2015 के स्तर के समान ही रहने की उम्मीद है और 2017-18 में औसत 3.8% तक रहने के आसार हैं। समग्र मांग को पूरा करने के लिए अगले दो या तीन वर्षों में बड़े स्तर की खनन परियोजनाओं के उत्पादन शुरू करने की उम्मीद है। इसके साथ ही, पेरू निजी निवेशकों का भरोसा बनाए रखने के लिए ढांचागत सुधार भी जारी रख सकता है।

मेक्सिको

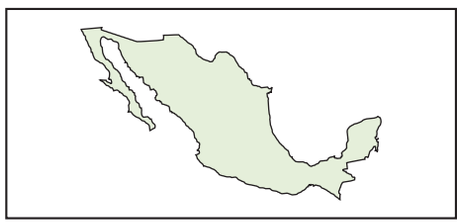

वर्ष 2015 के दौरान मेक्सिको की अर्थव्यवस्था 2.5% की मध्यम दर से बढ़ी। बेहतर रोजगार सृजन, वास्तविक आय वृद्धि (रियल वेज ग्रोथ) और ऋण में विस्तार के साथ निजी खपत अर्थव्यवस्था के प्रमुख वाहक बने। इसके विपरीत सार्वजनिक व्यय समायोजन के चलते निवेश गतिविधियां मंदी रहीं। तेल की कम कीमतें, चुनौतीपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिवेश, अमेरिका में मौद्रिक नीति में थोड़ी सख्ती और उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में मंदी के चलते मेक्सिकन पीसो कमजोर हुआ।

विपरीत अंतरराष्ट्रीय स्थितियों से निपटने के लिए मौद्रिक और राजकोषीय नीति में समग्र मांग में कमी करने के चलते 2016 में आर्थिक विकास दर में हल्की गिरावट की आशंका है। वृहद् आर्थिक स्थिति, कीमतों और वित्तीय स्थिति में स्थिरता और निवेशकों का भरोसा बने रहने, निवल निर्यात बढ़ने और निजी निवेश के बढ़ने से विकास दर केपुनः संतुलित हो जाने की संभावना है।

इंडोनेशिया

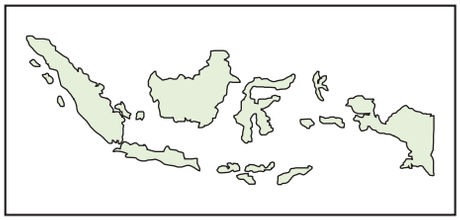

इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था 2005 से 2025 तक की 20 वर्षीय विकास योजना के अनुसार चलती है। इसे पंचवर्षीय मध्यम अवधि की योजनाओं में बांटा गया है। हर मध्यम अवधि की योजना में विकास की अलग-अलग प्राथमिकताएं हैं। वर्तमान मध्यम अवधि की योजना 2015 से 2020 वाली है। यह अन्य के साथ-साथ ढांचागत विकास और शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सामाजिक सहयोग कार्यक्रमों में सुधार पर केंद्रित है। सार्वजनिक योजनागत व्यय में इस तरह के परिवर्तन लंबे समय से लंबित ऊर्जा सब्सिडी सुधार के बाद हो पाए हैं।

बीते एक दशक में इंडोनेशिया की आर्थिक तरक्की में अहम भूमिका निभाने वाली कमोडिटीज़ की मांग में कमी के चलते इंडोनेशिया की जीडीपी 2012 से गिरती आ रही है। स्थायी निवेश, निर्यात और खपत में वृद्धि भी धीमी हुई है। निवेश के लिए परिवेश यद्यपि सकारात्मक रहाहै, फिर भी निवेशकों को लगातार विनियामकीय अनिश्चितताओं और ऊंची लॉजिस्टिक कीमतों का सामना करना पड़ा है। तथापि, सरकार द्वारा किए गए सुधार संकेत देते हैं कि सरकार चाहती है कि निवेशक इंडोनेशिया को कारोबार के लिए मुफीद देश समझें।

दक्षिण कोरियाई वॉन

कोरियाई वॉन (केआरडब्ल्यू) में यूएस डॉलर के मुकाबले दो महीने तक उछाल रहा और यह अप्रैल के 1139.20 से बढ़कर मई में 1191.60 का हो गया। इसके प्रमुख कारण फेड दरों में पूर्व वृद्धि का पुनर्मूल्यन और स्थानीय मैक्रो इकोनॉमिक निराशाएं रहीं। बैंक ऑफ कोरिया ने ली सरकार के कार्यकाल में बेंचमार्क दर लगातार 11वीं महीने भी अपरिवर्तित रखी, क्योंकि नवगठित बोर्ड ने नीति में बदलाव करने से पहले आर्थिक आंकड़ों और कॉर्पोरेट रिस्ट्रक्चरिंग में प्रगति की निगरानी करने का निर्णय लिया था। इन दरों के 9 जून को होने वाली अगली बैठक में भी अपरिवर्तित रहने की उम्मीद है। हालांकि बाद में महंगाई के लक्ष्य चूकने पर नीतिगत बदलाव किए जा सकते हैं।

एक एसटीएक्स यूनिट द्वारा दिवालिएपन की घोषणा करना चिंता का विषय है। किन्तु क्षेत्र को सरकारी मदद की उम्मीद है। इसलिए इस स्थिति के बने रहने की आशंका है, पर इसका असर कम होने के आसार हैं। इसके अतिरिक्त, एमएससीआई ईएम इंडेक्स में चीन के भारी अंश के चलते इक्विटी बाजारों में निराशा रही। इसके बावजूद फंडों के पुनः आवंटन की उम्मीद है, किन्तु यह प्रक्रिया धीरे-धीरे और सावधानी से होगी।

स्थानीय मुद्दों के भविष्य में मुद्रा में मजबूती के कारक बनने की उम्मीद है। हालांकि, ताईवान में भी निर्यात और औद्योगिक उत्पादन को लेकर ऐसी ही वृहद् आर्थिक निराशाएं रही हैं। तथापि, कोरियाई अर्थव्यवस्था आज भी ताईवानी अर्थव्यवस्था (जहां हेडलाइन विकास दर तीन तिमाहियों से नकारात्मक है) से मजबूत है। हालिया मंदी का कारण आधारभूत और नीतिगत उपाय कम प्रतीत होते हैं, क्योंकि बाजार की स्थिति कई दिनों तक ज्यादा हावी रही।

यूरो

मई के दौरान डॉलर के मुकाबले यूरो (लंदन क्लोजिंग दरों के संबंध में) कमजोर होकर 1.1447 से 1.1131 हो गईं। मई में यूरोपीय सेंट्रल बैंक (ईसीबी) की गवर्निंग काउंसिल की बैठक नहीं हुई। लिहाजा अप्रैल में अपरिवर्तित रही नीतिगत दरें और मार्च में घोषित नरमी संबंधी उपाय जारी रहे। ईसीबी अध्यक्ष मारियो द्राघी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ईसीबी का उद्देश्य वास्तविक अर्थव्यवस्था में ऋण का प्रवाह बढ़ाना था। ईसीबी 27 मई तक सार्वजनिक क्षेत्र के 799.4 बिलियन यूरो के बॉन्ड लाया।

हालांकि डॉलर के मुकाबले यूरो कमजोर हुआ, लेकिन दूसरी मुद्राओं की तुलना में ज्यादा स्थिर रहा, जो इस बात का संकेत है कि फेडरल मौद्रिक नीति के फैक्टर यूरो/यूएस डॉलर को प्रभावित करने वाले रहे। यूरो में स्थिरता यूरोजोन के संयुक्त चालू खाते के जीडीपी के 3.0% से ज्यादा सरप्लस रहने और ईसीबी की मौद्रिक नीति में नरमी की वजह से रही, जिसने वित्तीय बाजार में अस्थिरता को कम बनाए रखा।

ईसीबी का कॉर्पोरेट सेक्टर पर्चेज प्रोग्राम ऋण शर्तों में नरमी के साथ जून में शुरू होगा। अप्रैल में जारी विवरण से इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि खरीद के लिए उपलब्ध आस्तियों का संभावित आकार उससे कहीं बड़ा है, जो सोचा गया था। प्रति निर्गम 70% की सीमा उम्मीद से ज्यादा थी। वहीं, ऑटो सेक्टर जैसी वित्तीय शाखाओं वाली कॉर्पोरेशंस को शामिल करने से भी कार्यक्रम से कॉर्पोरेट ऋण पर पड़ने वाले प्रभाव के बजाय उम्मीदें बढ़ीं। हालांकि बाजार पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर चिंता बनी रही, फिर भी ईसीबी ने निवेशकों को यह कहते हुए पुनः सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि बाजार तरलता पर इसकी खरीद का संभावित असर बेहतर होगा। इसके अतिरिक्त, जून में ईसीबी टीएलटीआरओ-II कार्यक्रम शुरू करेगा, जिसके अंतर्गत निश्चित ऋण स्तरों को पूरा करने वाले बैंक ईसीबी की जमा दर जैसी निम्न ब्याज दर पर ही उधार ले सकेंगे।

ईसीबी को पूर्ण विश्वास है कि वास्तविक अर्थव्यवस्था में ऋण प्रवाह बढ़ाने को लेकर बरती गई क्वांटिटेटिव ईजिंग और नवीनतम उपायों का सकारात्मक असर होगा। गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट सेक्टर को ऋण मध्यम दर पर जारी रहेंगे। गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट सेक्टर को ऋण पर ब्याज दर मार्च की 0.8% से बढ़ाकर अप्रैल में 0.9% कर दी गई। जर्मनी के आर्थिक आंकड़े भी दिखाते हैं कि वास्तविक जीडीपी ग्रोथ का मुख्य कारक उपभोक्ता खर्च रहा, जिसके लगातार बने रहने से जर्मन घरेलू मांग पर निर्भर दूसरे यूरोजोन देशों को भी फायदा होगा। यूरो जोन में बेहतर आर्थिक विकास से निवेशकों का विश्वास बढ़ाने में मदद मिलेगी और इस तरह बेहतर पोर्टफोलियो आउटफ्लो को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे कमजोर होते यूरो को संभलने में भी मदद मिलेगी।

वर्ष के बाकी महीनों में यूएस डॉलर के मुकाबले यूरो में गिरावट के प्रति तुलनात्मक रूप से ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। यूएस दरों में बढ़ोत्तरी का सबसे ज्यादा असर होगा, विशेष रूप से तब जब वैश्विक बाजारों में तुलनात्मक रूप से स्थिरता बनी रहे।

ऑस्ट्रेलियाई डॉलर

मई के दौरान ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (लंदन क्लोजिंग दरों के संबंध में) यूएस डॉलर के मुकाबले कमजोर होकर 0.7611 से 0.7241 पर पहुंच गया। रिज़र्व बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया (आरबीए) ने ओवरनाइट कैश रेट 0.25 पॉइंट घटाकर 1.75% कर दी। इससे पहले 2015 में दो बार 0.25 पॉइंट की कटौती की गई थी।

आरबीए द्वारा मौद्रिक नीति में नरमी बरतने के फैसले के बाद मौद्रिक नीति के उम्मीदों पर खरी न उतरने के चलते ऑस्ट्रेलियाई डॉलर मई में काफी गिरा। इस फैसले के साथ ही बाजार की उम्मीदें भी बढ़ीं कि फेडरल रिजर्व जून या जुलाई में दूसरी बार दरें बढ़ाएगा। ऑस्ट्रेलिया और यूएस के बीच दो साल का एक्सचेंज मई में 30 बेसिस पॉइंट घट गया। इस गिरावट से दरों में कटौती के साथ-साथ आरबीए द्वारा आगे और नरमी बरते जाने की उम्मीद बनी। आरबीए की कार्रवाई को न्यायोचित ठहराने वाला प्रमुख कारक यह अनुमान था कि महंगाई 2018 तक लक्षित बिंदु से आगे नहीं जाएगी। हालांकि महंगाई के काफी कम रहने का अनुमान था, फिर भी अर्थव्यवस्था के अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद थी। आरबीए ने इस वर्ष और अगले वर्ष के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि अनुमान 2.5% से 3.5% रखा। कम महंगाई और चीन की आर्थिक वृद्धि दर मध्यम रहने के अनुमान के चलते आरबीए द्वारा ब्याज दरों में एक और कटौती की बड़ी उम्मीद है।

ऑस्ट्रेलिया के लिए व्यापार परिदृश्य भी ज्यादा अच्छा नहीं रहा। लौह अयस्क की कीमतें इस साल के शुरुआती महीनों की तुलना में गिर गईं। लौह अयस्क की कीमतें 21 अप्रैल को 70.46 डॉलर के शिखर से 29% नीचे रहीं और मई में ये कीमतें फरवरी के बाद से सबसे कम रहीं। हालांकि, दूसरी और तीसरी तिमाही में भी ऑस्ट्रेलियाई डॉलर के कमजोर रहने की आशंका थी, लेकिन गिरावट उम्मीद से ज्यादा रही।

भारतीय एक्ज़िम बैंक का कार्य-निष्पादन

₹1 लाख करोड़ से अधिक हुआ बैंक का ऋण पोर्टफोलियो

एक्ज़िम बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री यदुवेन्द्र माथुर ने शुक्रवार, 20 मई, 2016 को मुंबई में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में वर्ष 2015-16 के लिए बैंक के परिणामों की घोषणा की।

• **ऋण-व्यवस्थाएं** - बैंक ने 31 मार्च, 2016 तक 63 देशों में कुल 14.26 बिलियन यू एस डॉलर की 203 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की हैं। वित्तीय वर्ष 2016 के दौरान 2.61 बिलियन यू एस डॉलर की 9 ऋण-व्यवस्थाएं बांग्लादेश, कोत दि'वार, कांगो, गुयाना, गीनिया, तंजानिया, जिम्बाब्वे तथा म्यांमार को प्रदान की गई हैं।

• **परियोजना निर्यात संविदाएं** - वित्तीय वर्ष 2015-16 के दौरान 39 देशों में 50 निर्यातकों द्वारा कुल ₹22,551 करोड़ की परियोजना निर्यात संविदाएं की गईं।

• **क्रेता-ऋण** - राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाता (बीसी-एनईआईए) - बैंक ने 31 मार्च, 2016 तक बीसी-एनईआईए के अंतर्गत कुल 2.49 बिलियन यूएस डॉलर राशि की 22 परियोजनाओं के लिए 2.19 बिलियन यूएस डॉलर के ऋण को मंजूरी दी है। बैंक द्वारा बीसी-एनईआईए के अंतर्गत कुल 5.11 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य की 36 परियोजनाओं, जिनमें कई वर्तमान परियोजनाएं तथा पाइपलाइन परियोजनाएं शामिल हैं, को मदद करने हेतु सिद्धांततः सहमति दी गई है।

• **विदेशी निवेश** - 31 मार्च, 2016 को समाप्त वित्तीय वर्ष के दौरान बैंक द्वारा विदेशी निवेश वित्त कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ₹5,264 करोड़ की मंजूरी प्रदान की गई, जिनमें 26 विदेशी कँपनियों के अधिग्रहण / स्थापना के लिए ₹5,217 करोड़ तथा विद्यमान सुविधाओं के नवीकरण के लिए ₹47 करोड़ की राशि शामिल है।

• **कर पूर्व एवं कर पश्चात लाभ** - वर्ष 2015-16 के दौरान बैंक का कर पूर्व लाभ (पीबीटी) एवं कर पश्चात लाभ (पीएटी) क्रमशः ₹453 करोड़ तथा ₹316 करोड़ रहा।

संसाधन / ट्रेजरी

• वित्तीय वर्ष के दौरान बैंक ने विविध परिपक्वता अवधि वाली उधारियों के रूप में ₹23,183 करोड़ के रुपया संसाधन तथा ₹13,781 करोड़ मूल्य के समतुल्य विदेशी मुद्रा संसाधन जुटाए।

• बैंक को निवेश ग्रेड की रेटिंग प्रदान की गई है जो भारत की संप्रभु रेटिंग के समतुल्य है। यथा 31 मार्च, 2016 को बैंक को मूडीज द्वारा बीएए3 (सकारात्मक) रेटिंग, स्टैंडर्ड एंड पुअर्स द्वारा बीबीबी ऋणात्मक (स्थिर), फिच द्वारा बीबीबी ऋणआत्मक (स्थिर) तथा जापान क्रेडिट रेटिंग एजेंसी (जेसीआरए) द्वारा बीबीबी+ (स्थिर) रेटिंग प्रदान की गई है। बैंक के घरेलू रुपया ऋण लिखतों को रेटिंग एजेंसियों क्रिसिल तथा इक्रा द्वारा 'एएए' जैसी उच्चतम रेटिंग प्रदान की जाती रही है।

अंतरराष्ट्रीय पूंजी बाजार में नए बेंचमार्क

• 500 मिलियन यूएस डॉलर का 5 वर्षीय अवधि का रेगएस ग्रीन बॉन्ड सफलतापूर्वक जारी किया गया जो यूएस डॉलर मूल्य में भारत के बाहर जारी किया गया पहला ग्रीन बॉन्ड है। साथ ही यह 2015 में एशियाके बाहर जारी किया गया पहला बेंचमार्क - साइज़ ग्रीन बॉन्ड तथा एशिया के बाहर जारी किया गया तीसरा ग्रीन बॉन्ड निर्गम है। करीब 140 से अधिक ग्रीन निवेशकों तथा रियल मनी खातों की सक्रिय सहभागिता से बॉन्ड निर्गम को 3.2 गुना अभिदान मिला तथा जबरदस्त मांग के चलते प्रारंभिक 250 मिलियन यूएस डॉलर के निर्गम को बढ़ाया गया।

• 500 मिलियन यूएस डॉलर का 5.5 वर्षीय रेग एस बॉन्ड जारी किया गया। निर्गम को ऑर्डर बुक में 1.25 बिलियन यूएस डॉलर ज्यादा अभिदान मिला तथा बॉन्ड 2.5 गुना ओवर सब्सक्राइब हुआ। बॉन्ड में 110 से ज्यादा निवेशकों ने निवेश किया।

• अपने निवेशक आधार को व्यापक बनाते हुए बैंक ने दो अलग मुद्राओं ऑस्ट्रेलियाई डॉलर एवं यूएस डॉलर में उरीदाशी बॉन्ड जारी कर 162.26 मिलियन यूएस डॉलर की राशि जुटाई। बॉन्ड का यूएसडी स्वैप मूल्य, समान अवधि के लिए बैंक के सार्वजनिक यूएसडी बॉन्ड मूल्य से कम रहा। बैंक उरीदाशी बॉन्ड बाजार में लगातार चौथी बार बॉन्ड जारी करने वाली पहली और एकमात्र भारतीय संस्था बना हुआ है।

सलाहकारी एवं परामर्शी सेवाएं

• **पड़ोसी देशों में इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के लिए विशेष ऋण सुविधा** : एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के समर्थन पर बांग्लादेश में मैत्री पॉवर परियोजना के लिए कुल 1.8 बिलियन यू एस डॉलर मूल्य की वित्तीय सहायता प्रदान करेगा। वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भेल सबसे कम बोलीकर्ता के रूप में सामने आया है। बांग्लादेश भारत फ्रेंडशिप पॉवर कँपनी लि. नामक परियोजना में एन टी पी सी एवं बांग्लादेश पॉवर डेवलपमेंट बोर्ड के बीच 50:50 का संयुक्त उद्यम है। एक बार चालू हो जाने के बाद, यह बांग्लादेश में सबसे बड़ा पॉवर प्लांट होगा। यह परियोजना कई मामलों में विशिष्ट है क्योंकि यह पहली सुपर क्रिटिकल पॉवर परियोजना है जिसमें भेल शामिल है तथा यह पहली परियोजना है जिसे एन टी पी सी द्वारा विदेश में स्थापित किया जा रहा है।

• **अक्षय ऊर्जा के लिए पहल** : एक्ज़िम बैंक सी ओ पी 21 पहल का एक हिस्सा होने के चलते विकासशील देशों में सौर ऊर्जा को बढ़ाने के लिए पेरिस में इंटरनेशनल सोलर अलाएंस (आई.एस.ए.) की स्थापना करने हेतु नवीन एवं अक्षय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर सहायता प्रदान कर रहा है। एक्ज़िम बैंक आई एस ए की सलाहकारी समिति का एक सदस्य भी है तथा इसने जनवरी 2016 में आबुधाबी में आयोजित आई एस ए की दूसरी संचालन समिति की बैठक में 10,000 मेगावाट की सोलर परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए एक प्रजेंटेशन भी दिया है। बैंक ने ''इंटरनेशनल सोलर अलाएंस : नर्चरिंग पॉसिबिलिटीज'' नामक एक शोध अध्ययन भी प्रकाशित किया है।

• **निर्यात विकास निधि** : एक्ज़िम बैंक अधिनियम के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा स्थापित निर्यात विकास निधि (ईडीएफ) एक विशेष निधि है, जिसका अपना तुलन पत्र एवं आय विवरणी है। निधि का उपयोग विशेष गतिविधियों में किया जा सकता है जिसकी मंजूरी भारत सरकार द्वारा दी जाती है। भारत सरकार ने सात ईरानी बैंकों को भारत से स्टील रेल्स आयात करने तथा चाबहार पोर्ट परियोजना के विकास के लिए ₹3,000 करोड़ की मंजूरी प्रदान की है। भारत सरकार द्वारा ऋण सुविधा की गारंटी भी प्रदान की गई है।

• **कुकुज़ा परियोजना विकास कंपनी** : एक्ज़िम बैंक, आईएल एंड एफएस, एएफडीबी तथा एसबीआई ने मिलकर नैरोबी से बाहर अफ्रीका में एक कुकुज़ा परियोजना विकास कंपनी (पीडीसी) स्थापित की है। अफ्रीका में कुछ परियोजनाएं पीडीसी द्वारा विचाराधीन हैं।

संकेतक	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
जीडीपी (वर्तमान मूल्यों पर, बिलियन यूएस डॉलर)	**1708.5**	**1823.2**	**1828.9**	**1863.9**	**2041.9**	**2075.8[f]**
वास्तविक जीडीपी वृद्धि (%)	**8.9**	**6.7**	**5.6****	**6.6****	**7.2****	**7.6[#]****
जीडीपी में क्षेत्रगत हिस्सा (%)						
कृषि एवं संबद्ध कार्यकलाप	14.6	18.5	17.8**	17.5**	16.3**	15.3[p]**
उद्योग	27.9	32.5	31.9**	31.5**	31.2**	31.2[p]**
सेवाएं	57.5	49.0	50.3**	51.0**	52.5**	53.5[p]**
मुद्रास्फीति दर (डब्ल्यूपीआई, वार्षिक औसत %)	**9.6**	**8.9**	**7.4**	**6.0**	**2.0**	**-2.5**
मुद्रास्फीति दर (सीपीआई, वार्षिक औसत %)	**10.4**	**8.3**	**10.2**	**9.5**	**6.0**	**4.9**
सकल राजकोषीय घाटा (जीडीपी का %)	**4.8**	**5.9**	**4.9**	**4.5**	**4.1**	**3.9[e]**
विनिमय दर (रु. / यूएस डॉलर, औसत)	45.6	47.9	54.4	60.5	61.1	65.5
विनिमय दर (रु. / यूरो, औसत)	60.2	65.9	70.1	81.2	77.5	72.3
निर्यात (बिलियन यूएस डॉलर)	**249.8**	**306.0**	**300.4**	**314.4**	**310.3**	**262.0**
% परिवर्तन	*39.8*	*22.5*	*-1.8*	*4.7*	*-1.3*	*-15.6*
तेल निर्यात (बिलियन यूएस डॉलर)	**36.4**	**56.7**	**60.9**	**63.2**	**56.7**	**30.4**
% परिवर्तन	*29.0*	*55.9*	*7.3*	*3.8*	*-10.2*	*-46.4*
गैर-तेल निर्यात (बिलियन यूएस डॉलर)	**213.4**	**249.2**	**239.5**	**251.2**	**253.6**	**231.6**
% परिवर्तन	*41.8*	*16.8*	*-3.9*	*4.9*	*0.9*	*-8.7*
आयात (बिलियन यूएस डॉलर)	**369.8**	**489.3**	**490.7**	**450.2**	**448.0**	**380.4**
% परिवर्तन	*28.2*	*32.3*	*0.3*	*-8.3*	*-0.5*	*-15.1*
तेल आयात (बिलियन यूएस डॉलर)	**106.0**	**155.0**	**164.0**	**164.8**	**138.3**	**82.9**
% परिवर्तन	*21.6*	*46.2*	*5.9*	*0.4*	*-16.0*	*-40.1*
गैर-तेल आयात (बिलियन यूएस डॉलर)	**263.8**	**334.3**	**326.7**	**285.4**	**309.7**	**297.5**
% परिवर्तन	*31.1*	*26.7*	*-2.3*	*-12.6*	*8.5*	*-3.9*
व्यापार संतुलन (बिलियन यूएस डॉलर)	**-120.0**	**183.3**	**190.3**	**135.8**	**137.7**	**118.4**
सेवा निर्यात (बिलियन यूएस डॉलर)*	**124.6**	**140.9**	**145.7**	**151.5**	**156.0**	**154.3**
सॉफ्टवेयर निर्यात (बिलियन यूएस डॉलर)*	53.1	62.2	65.9	69.4	73.1	74.2
सेवा आयात (बिलियन यूएस डॉलर)*	**80.6**	**76.9**	**80.8**	**78.5**	**79.8**	**84.6**
सेवा संतुलन (बिलियन यूएस डॉलर)*	44.0	64.0	64.9	73.0	76.2	69.7
चालू खाता शेष (बिलियन यूएस डॉलर)*	**-47.9**	**-78.2**	**-87.8**	**-32.4**	**-26.8**	**-22.1**
जीडीपी के प्रतिशत के रूप में चालू खाता शेष (%)	*-2.8*	*4.2*	*4.8*	*1.7*	*1.3*	*1.1*
विदेशी मुद्रा भंडार (बिलियन यूएस डॉलर)	**304.8**	**294.4**	**292.0**	**304.2**	**341.6**	**360.2**
विदेशी ऋण (बिलियन यूएस डॉलर)	**317.9**	**360.8**	**409.4**	**446.2**	**475.0**	**485.6**
जीडीपी की तुलना में विदेशी ऋण अनुपात (%)	18.2	21.1	22.4	23.8	23.8	23.7
अल्पावधि ऋण / कुल ऋण (%)	20.4	21.7	23.6	20.5	18.0	17.2
कुल ऋण सेवा अनुपात (%)	4.4	6.0	5.9	5.9	7.6	8.8
एफडीआई (बिलियन यूएस डॉलर)	**36.0**	**46.6**	**34.3**	**36.0**	**45.1**	**55.4**
जीडीआर / एडीआर (बिलियन यूएस डॉलर)	2.0	0.6	0.2	0.02	1.3	0.4
एफआईआई (नेट) (बिलियन यूएस डॉलर)	29.4	16.8	27.6	5.0	40.9	3.5
एफडीआई जावक (बिलियन यूएस डॉलर)	**17.2**	**10.9**	**7.1**	**9.2**	**4.0**	**8.8**

पी - ईएसी, भारत सरकार के अस्थायी अनुमान; ई - भारत सरकार के अनुमान; एफ - आईआईएफ अनुमान; * - 2009-10 के बाद के आंकड़े भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भुगतान मैनुअल के आईएमएफ शेष राशि में निर्धारित दिशानिर्देशों के आधार पर बीओपी आंकड़ों के मानक प्रस्तुतीकरण के नए स्वरूप के अनुसार दिए गए हैं; ** - संशोधित आधार वर्ष 2011-12 के अनुसार डेटा; # - बजट 2016-17 अनुमान.

स्रोत : आर्थिक सर्वेक्षण, विभिन्न मुदे; केंद्रीय बजट, आरबीआई मासिक बुलेटिन, वार्षिक रिपोर्ट और साप्ताहिक सांख्यिकी अनुपूरक; वित्त मंत्रालय; सीएसओ; वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय; अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान (आईआईएफ)

व्यापार एवं भागीदारी अवसर

व्यापार अवसर

टर्नकी चीनी परियोजना

टर्नकी चीनी रिफाइनरियों और चीनी आधारित एथनॉल संयंत्रों के अग्रणी आपूर्तिकर्ताओं में से एक। गन्ने की खेती के लिए उपयोगी उपकरणों, सोलर प्लांटों और विंड वेंटिलेटरों की भी आपूर्ति।

हर्बल कॉस्मेटिक उत्पाद

2006 में स्थापित, त्वचा में निखार और चमक लाने तथा पिंपल, झुर्रियों, डैंड्रफ और दाग-धब्बों से निजात दिलाने वाले हर्बल कॉस्मेटिक उत्पादों का विनिर्माण।

सर्जिकल दस्ताने

आईएसओ 13485 : 2003 प्रमाणित कँपनी, स्टेरिल मेडिकल दस्तानों के विनिर्माता और निर्यातक। प्रति माह 20 लाख जोड़े दस्ताने बनाने की क्षमता वाली 2 अत्याधुनिक इकाइयां।

पाइप और फिटिंग

1988 में स्थापित, 2 स्टार एक्सपोर्ट हाउस का दर्जा प्राप्त कंपनी, प्लम्बिंग और ड्रिप सिंचाई में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न उत्पादों के विनिर्माण और निर्यात में संलग्न है।

आफ्टर मिंट्स

सूखा पान बनाना एक नई अवधारणा है, फिर भी आफ्टर मिंट्स देशभर में काफी लोकप्रिय हैं। सूखा पान एक प्राकृतिक माउथ फ्रेशनर है जिसका कोई साइड इफेक्ट नहीं होता और खाना पचाने में भी मदद करता है।

मिश्रित आम रस

फल और सब्जियों आधारित खाद्य सामग्रियों के विनिर्माता और निर्यातक जो रंग, फ्लेवर और सुगंध के मिश्रण वाले इसके बेस्ट सेलिंग मिश्रित आमरस सहित फल और सब्जियों के रस एवं प्यूरी उपलब्ध कराते हैं।

भागीदारी अवसर

परियोजना अवसर

(I) संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) स्थित कैंसल्टैंसी फर्म शारजाह में एक मीडिया सिटी के विकास के लिए भारतीय इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट और निर्माण (ईपीसी) कॉन्ट्रैक्टर के साथ भागीदारी की इच्छुक है।

निर्यात अवसर

(I) कांगो सरकार अपनी 85,000,000 नागरिकों की आबादी के लिए विशिष्ट पहचान पत्र (यूनीक आइडेंटिटी कार्ड) परियोजना के क्रियान्वयन के लिए भारतीय आईटी / सॉफ्टवेयर कँपनी की तलाश में है।

(II) न्यू बेनिन से एक आयातक ठोस कचरे के पेलेट और ब्रिकेट (छोटे-छोटे टुकड़े) बनाने की परियोजना के क्रियान्वयन के लिए एक उपयुक्त भागीदार की तलाश में है।

(III) मिस्र के होम और इलेक्ट्रिकल एप्लायंस विनिर्माता भारत से स्टेनलैस स्टील कॉइल का आयात करना चाहते हैं। इच्छुक पार्टियां निम्नलिखित संपर्क विवरण पर मार्केटिंग सलाहकारी सेवाएं समूह से संपर्क कर सकती हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 2217 2600 एक्सटेंशन : 2707 / 2737; फैक्स : 2218 8268. ईमेल : maseximbankindia.in